पश्चिम मध्य रेलवे

मुख्यालय, जबलपुर



राजभाषा सरिता

वर्ष –2020 अंक – 35 जनवरी – मार्च



संपादकीय

अपनों से मन की बात .....

पश्चिम मध्य रेलवे, मुख्यालय की गृह पत्रिका राजभाषा सरिता का 35 वां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है।

कहते हैं कि चार कोस पर पानी बदलता है और आठ कोस पर भाषा बदल जाती है। हमारा देश बहुभाषी देश है। यहाँ अनेक भाषाएँ बोलने वाले लोग रहते हैं, हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जिसे अधिकांश लोग समझते हैं, बोलते हैं और प्रयोग में लाते हैं। संपूर्ण भारतवर्ष में हिंदी के बोलने एवं समझने वालों की संख्या तथा इसके विस्तार को ध्यान में रखकर ही इसे भारत संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया है।

हिंदी को राजभाषा का दर्जा देने की पृष्ठ भूमि में एक महत्वपूर्ण कारण यह भी है कि हिंदी पूरे भारत को जोड़ने वाली भाषा रही है। भारतीय मनीषियों ने जिस एकीकृत भारत का स्वप्न संजोया था, उसे मूर्त रूप देने में हिंदी भाषा का योगदान सर्वोपरि है। हमारे देश की राजनीतिक एकता भले ही पिछली शताब्दी की देन है परंतु सांस्कृतिक दृष्टि से भारत सदियों से एक राष्ट्र रहा है। पर्यटन, तीर्थाटन, व्यापार–वाणिज्य सहित अन्य उद्देश्यों से भारत के एक क्षेत्र के निवासी, यहाँ तक कि अशिक्षित और अल्प शिक्षित लोग भी, दूसरे क्षेत्रों की यात्रा करते रहे हैं। उस समय टूटी –फूटी हिंदी के माध्यम से ही वे अपने को पूरे भारत में अभिव्यक्त करते रहे हैं। इस प्रकार राष्ट्रीय एकता के महान लक्ष्य की पूर्ति में हिंदी हमेशा से ही साधिका रही है।

वैश्वीकरण और उदारीकरण के इस युग में सूचना तकनीकी एवं संप्रेषण की प्रगति को ध्यान में रखते हुए सूचना– प्रौद्योगिकी के विशेषज्ञ भी हिंदी भाषा को लेकर सचेत हो रहे हैं। उनके अथक और समर्पित प्रयासों से पहले जिन क्षेत्रों में हिंदी का प्रयोग प्रायः संभव नहीं माना जाता था। वहाँ भी हिंदी ने अपनी जगह बनाई है। कंप्यूटर के क्षेत्र में यूनीकोड के प्रचलन के कारण अब हमें हिंदी के लिए सॉफ्टवेयर खरीदने की आवश्यकता नहीं है। हम अपने कंप्यूटर पर यूनीकोड सक्रिय कर हिंदी में कार्य सफलतापूर्वक कर सकते हैं। आज यूनीकोड के माध्यम से वेबसाइटों के पते एवं ऑपरेटिंग प्रणाली में हिंदी प्रयोग का दायरा लगातार बढ़ रहा है। आज हमें आवश्यकता केवल इस बात की है कि हम अपने दरवाजे एवं खिड़कियाँ खुला रखकर, विभिन्न भाषाओं के शब्दों को अंगीकार करें और हिंदी को ज्ञान –विज्ञान की भाषा के रूप में संपन्न बनाने में अपना योगदान दें।

राजभाषा प्रयोग – प्रसार की दृष्टि से पिछला वर्ष पश्चिम मध्य रेलवे के लिए उपलब्धियों भरा रहा है। हमें रेल मंत्री राजभाषा शील्ड एवं राजभाषा ट्रॉफी प्राप्त हुई। रेल मंत्री राजभाषा रजत पदक के अलावा 04 व्यक्तिगत पुरस्कार प्राप्त हुए। साथ ही तकनीकी मौलिक पुस्तक लेखन पुरस्कार योजना के अंतर्गत 10 हजार रूपये का एक द्वितीय पुरस्कार भी प्राप्त हुआ है। इन उपलब्धियों के लिए हम आप सभी को बधाई देते हैं और आशा करते हैं कि आप सभी के योगदान से हम इस प्रगति को आगे भी बरकरार रखेंगे।

इस अंक में कविता, कहानी, लेख, व्यंग्य आदि विधाओं के साथ हमारी विभागीय गतिविधियों को छाया चित्रों सहित प्रकाशित कर इसे सूचनापरक बनाने का प्रयास किया गया है। आशा है कि यह अंक भी आपको पंसद आएगा।

हम अपने सभी रचनाकारों एवं सहयोगियों को धन्यवाद देते हैं और सुधी पाठकों से अनुरोध करते हैं कि अपनी प्रतिक्रिया एवं सुझावों से हमें अवश्य अवगत कराए।

प्रतीक्षा में .....

(पी. एस. बगड़वाल)
वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी

हमारे नए महाप्रबंधक



श्री शैलेन्द्र कुमार सिंह

हमारे नये महाप्रबंधक, श्री शैलेन्द्र कुमार सिंह ने दिनांक 14.01.2020 को पश्चिम मध्य रेलवे के नए महाप्रबंधक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है। इससे पूर्व आप उत्तर रेलवे, नई दिल्ली में प्रधान मुख्य विद्युत इंजीनियर के पद पर कार्यरत थे।

आईआईटी, दिल्ली से एमटेक की उपाधि हासिल कर 1982 में संघ लोक सेवा आयोग से भारतीय रेल विद्युत इंजीनियरी सेवा में चयनित होने के उपरांत आपने वर्ष 1984 में दक्षिण पूर्व रेलवे से अपनी भारतीय रेल सेवा प्रारंभ की।

आपने वर्ष 2008 से 2009 तक मुख्य विद्युत इंजीनियर (चल स्टॉक) मेट्रो, कोलकाता के पद पर रहते हुए पुराने रेकों की विश्वसनीयता सुनिश्चित करने के लिए प्रमुख ओवरहॉलिंग एवं मरम्मत कार्य करवाए साथ ही रेकों की संरक्षा में सुधार हेतु काफी समय से लंबित अनुरक्षण कार्य भी निष्पादित करवाए। वर्ष 2009 से 2011 तक पूर्व रेलवे पर मुख्य विद्युत लोको इंजीनियर के रूप में आप हावड़ा लोको शेड तथा आसनसोल इलेक्ट्रिक लोको शेड के अनुरक्षण के कार्यों को संतोषजनक स्तर तक पहुंचाने में सफल रहे जिससे लोको की विश्वसनीयता में काफी सुधार परिलक्षित हुआ। आप वर्ष 2011 से 2013 तक पूर्व रेलवे के मुख्य संरक्षा अधिकारी के अपने कार्यकाल के दौरान पूर्व रेलवे पर, विशेषकर अंडाल एवं हावड़ा जैसे प्रमुख यार्डों की संरक्षा में सुधार करवाने के साथ ही बड़ी संख्या में लाइनों के दोहरीकरण एवं नई लाइनों के निर्माण–कार्य निष्पादित करवाने में सफल रहे हैं।

आप दिनांक 03.01.2014 से 25.04.2016 तक पूर्व तट रेलवे के खुर्दा रोड मंडल पर मंडल रेल प्रबंधक के रूप में कार्यरत रहे हैं। अपने कार्यकाल के दौरान मंडल का लदान 91.5 मेट्रिक टन से 111.05 मेट्रिक टन तक बढ़ाने, पुरी रथ यात्रा (नव कलवर वर्ष 2015) के दौरान भीड़ का सफलतापूर्वक प्रबंधन करवाने, मंडल पर दोहरीकरण एवं तीसरी लाइन की परियोजनाओं को पूरा करवाने, कर्मचारी कल्याण के रूप में रेलकर्मियों के बच्चों के लिए पार्क बनवाने, पुरी, भुवनेश्वर, तलचर तथा पारादीप के प्रमुख यार्डों की रिमॉडलिंग करवाने, लंबी गाड़ियों को चलाने के लिए लॉंग हॉल लूप की शुरूआत करवाने और वर्ष 2016 में भुवनेश्वर में (रेलवे बोर्ड स्तर के) रेलवे सप्ताह समारोह का सफलतापूर्वक आयोजन करवाने के अलावा अनेक महत्वपूर्ण परियोजनाओं के निष्पादन तथा यात्री एवं रेल कर्मियों की सुविधाओं से संबंधित कई सराहनीय कार्य निष्पादित करवाने में आपकी भूमिका अत्यंत सराहनीय रही है।

आपने दिनांक 18.05.2016 से 28.06.2017 तक पूर्व मध्य रेलवे के मुख्य विद्युत लोको इंजीनियर के रूप अपने कार्यकाल के दौरान पूर्व मध्य रेलवे पर कटिहार तक विद्युत कर्षण आरंभ करवाया, साथ ही इस रेलवे पर लोको विश्वसनीयता में सुधार हुआ, विद्युत कर्षण पर अतिरिक्त गाड़ियां चलाने के लिए समुचित क्रू (चालक–दल) प्रबंधन का

सराहनीय कार्य किया। आपके कुशल नेतृत्व एवं मार्गदर्शन में गाड़ियों को विद्युत कर्षण पर लेने के लिए डीजल चालक–दल हेतु सघन परिवर्तन पाठ्यक्रम आयोजित किये गये और पूर्व मध्य रेलवे पर अतिरिक्त मेमु (MEMU) रेकों का शुभारंभ एवं परिचालन प्रारंभ हुआ।

दिनांक 29.06.2017 से 30.05.2018 तक कार्यपालक निदेशक विद्युत इंजीनियरी/चल–स्टॉक, रेलवे बोर्ड के पद पर रहते हुये आपने सीएलडब्ल्यू , डीएलडब्ल्यू एवं आरडीएसओ के साथ उच्च कोटि का समन्वय स्थापित करते हुए लोको तथा सामग्री व्यवस्था सुनिश्चित कर डीएलडब्ल्यू में डीजल से विद्युत में परिवर्तन करवाने में भी आप सफल रहे हैं। शत–प्रतिशत विद्युतीकरण को ध्यान में रखते हुये आपने 3 वर्षों के लिए उत्पादन योजना बनाने, वर्ष 2017–2018 की अवधि के दौरान 377 लोको के रिकॉर्ड आउट–टर्न के लिए सीएलडब्ल्यू, डीएलडब्ल्यू एवं डीएमडब्ल्यू पर सतत निगरानी रखने, पारंपरिक लोको (मेधा तथा भेल) पर रिजेनरेटिव ब्रेकिंग, लोको आउट–टर्न बढ़ाने के लिए पर्याप्त सामग्री सुनिश्चित करने हेतु सामग्री योजना तैयार करवाने एवं स्त्रोतों का विकास करवाने तथा डीएलडब्ल्यू एवं डीएमडब्ल्यू में विद्युत लोको उत्पादन के लिए निकट समन्वय करवाने में आपने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

आपने दिनांक 01.06.2018 से 14.01.2020 तक उत्तर रेलवे के प्रधान मुख्य विद्युत इंजीनियर के रूप में कार्य करते हुए पुश–पुल परिचालन के लिए इंजनों के मॉडिफिकेशन, ऑटो स्विच न्यूट्रल सेक्शन निष्पादित करवाने, अप्रचलन से बचने के लिए लोको शेड में जीटीओ लोको को आईजीबीटी लोको के रूप में मॉडिफिकेशन करवाने, उत्तर रेलवे पर 905 किमी. के उच्चतम विद्युतीकरण हासिल करने हेतु कोर/आरवीएनएल को अपेक्षित सहायता प्रदान करवाने, लोको की विश्वसनीयता बढ़ाने व कोचिंग में सुधार करवाने, डब्ल्यूएपी–5 लोको पर कंपोजिट कंवर्टर का शुभारंभ करवाने और उन्हें एचओजी परिचालन के योग्य बनवाने, सर्विस बिल्डिंग क्वार्टरों में शत–प्रतिशत एलईडी लाइट की व्यवस्था करवाने, लक्ष्य के अनुसार उत्तर रेलवे के स्टेशनों पर हवाई–अड्डों जैसी प्रकाश–व्यवस्था करवाने तथा उत्तर रेलवे के सभी रनिंग रूमों में वातानुकूलन की व्यवस्था करवाने आादि कार्य सफलतापूर्वक निष्पादित करवाने में आप सफल रहे।

इसके अलावा अपनी रेल सेवा के दौरान विभिन्न पदों पर कार्य करते हुए आपने लोको परिचालन एवं अनुरक्षण तथा विद्युत इंजीनियरी से संबंधित कई अभिनव एवं अनेकों महत्वपूर्ण कार्य निष्पादित करवाये हैं। फलस्वरूप, रेलों के संचालन में संरक्षा, सुरक्षा एवं समय–पालन सुनिश्चित हो सका।

महाप्रबंधक, पमरे के रूप में कार्यभार ग्रहण करने के बाद अल्प समय में ही आपने गाड़ियों के परिचालन में संरक्षा, सुरक्षा एवं समय–पालन के अलावा निर्माण कार्यों में गति, विद्युतीकरण एवं विभिन्न यात्री सुविधाओं के कार्य को आगे बढ़ाने में गहरी रुचि ली है। कर्मचारियों से जुड़े मामलों के निपटान में आपका सहयोग एवं मार्गदर्शन सराहनीय है। अपने सरल एवं मधुर स्वभाव के कारण आप अधिकारियों एवं कर्मचारियों के बीच समान रूप से लोकप्रिय हैं।

हम राजभाषा परिवार की ओर से अपने नए महाप्रबंधक का हार्दिक अभिनंदन करते हैं। हमें विश्वास है कि आपके कुशल नेतृत्व व मार्गदर्शन में तथा व्यापक प्रशासनिक अनुभव से पश्चिम मध्य रेल, राजभाषा प्रयोग–प्रसार के साथ–साथ सभी क्षेत्रों में नई ऊँचाइयों को हासिल करेगा।



हमारे नए मुख्य राजभाषा अधिकारी



श्री कार्तिक चौहान

श्री कार्तिक चौहान, प्रधान वित्त सलाहकार ने दिनांक 14 जनवरी, 2020 से पश्चिम मध्य रेलवे के 12वें मुख्य राजभाषा अधिकारी के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

आपने वर्ष 1982 में सेंट अलॉसियस महाविद्यालय से स्नातक तथा वर्ष 1985 में स्नातकोत्तर (एम.ए.) की उपाधि अंग्रेजी साहित्य में रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय से प्राप्त की। उल्लेखनीय है कि आप स्वतंत्रता सेनानी एवं हिंदी की सुप्रसिद्ध कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान के पौत्र हैं तथा उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद के प्रपौत्र हैं।

आप भारतीय रेल लेखा सेवा के 1987 बैच के अधिकारी हैं। आपने मध्य रेलवे में सहायक लेखा अधिकारी के रूप में भारतीय रेलवे में अपनी सेवाएं प्रारंभ की। आपने मध्य रेलवे, रेल कोच फैक्ट्री, कपूरथला तथा दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे में लेखा विभाग एवं सतर्कता विभाग में विभिन्न पदों पर कार्य करते हुए अनेक सराहनीय कार्य निष्पादित किए। आप मध्यप्रदेश विद्युत मंडल, मुख्यालय में प्रतिनियुक्ति पर ढ़ाई वर्ष के लिए अपनी सेवाएं दे चुके हैं। पश्चिम मध्य रेलवे, जबलपुर की आरंभिक सेटिंग अप कार्य के समय विशेष कार्य अधिकारी (ओएसडी) के सचिव के रूप में भी आपने अपनी सेवाएं दी हैं।

रेल सेवा के दौरान विभिन्न पदों पर कार्य करते हुए आपने अपनी विशिष्ट कार्य शैली एवं त्वरित निर्णय क्षमता से रेल संचालन संबंधी जटिल वित्तीय मामलों के निपटान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आपके मार्गदर्शन एवं कुशल नेतृत्व में पश्चिम मध्य रेलवे के लेखा विभाग ने एक अग्रणी विभाग के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान कायम की है।

आपकी साहित्यिक पृष्ठभूमि के फलस्वरूप न केवल जबलपुर शहर बल्कि देश की ख्याति प्राप्त साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं द्वारा विचार गोष्ठियों एवं अन्य विविध कार्यक्रमों में आपको आमंत्रित किया जाता है और विशेष सम्मान दिया जाता है। समय–समय पर सुप्रसिद्ध साहित्यकारों की जयंती आदि कार्यक्रमों में रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड) द्वारा भी आपको आमंत्रित किया जाता है।

आपने पश्चिम मध्य रेलवे की सांस्कृतिक अकादमी के अध्यक्ष एवं खेलकूद एसोसिएशन के कोषाध्यक्ष के रूप में भी अपना उत्कृष्ट मार्गदर्शन एवं सेवाएं प्रदान की हैं।

अधिकारियों एवं कर्मचारियों के साथ आपका समन्वय अतुलनीय है। किसी भी मामले का निपटान सकारात्मक सोच के साथ करने में आप विश्वास रखते हैं। सभी के साथ समान रूप से व्यवहार कुशलता के कारण न केवल रेलवे बल्कि जबलपुर शहर में भी आपको बेहद सम्मान के साथ देखा जाता है।

हम राजभाषा परिवार की ओर से अपने नए मुख्य राजभाषा अधिकारी का हार्दिक स्वागत करते हैं। हमें पूर्ण विश्वास है कि आपकी साहित्यिक पृष्ठभूमि का लाभ पश्चिम मध्य रेलवे के राजभाषा विभाग को अवश्य मिलेगा और आपके कुशल नेतृत्व एवं मार्गदर्शन तथा व्यापक प्रशासनिक अनुभव से पश्चिम मध्य रेलवे राजभाषा हिंदी के प्रयोग–प्रसार के क्षेत्र में सर्वोच्च शिखर को प्राप्त करेगा।

जन गण मन के शिल्पकार



रवीन्द्रनाथ टैगोर

आधुनिक भारत की संस्कृति एक विकसित शतदल कमल के समान है जिसकी एक -एक पंखुड़ी एक -एक प्रांतीय भाषा, उसका साहित्य और संस्कृति है। किसी एक को मिटा देने से उसकी शोभा ही नष्ट हो जाएगी। हम चाहते है कि भारत की सारी प्रांतीय बोलियां जिनमें सुंदर साहित्य की सृष्टि हुई है, अपने -अपने घर में (प्रांत में) रानी बन कर रहें और आधुनिक भाषाओं के हार की मध्यमणि हिंदी भारत - भारती होकर विराजती रहें।

राजभाषा सरिता

अंक – 35 वर्ष –2020 जनवरी – मार्च

संरक्षक
श्री शैलेन्द्र कुमार सिंह
महाप्रबंधक

श्री शोभन चौधुरी
अपर महाप्रबंधक

मार्गदर्शक
श्री कार्तिक चौहान
मुख्य राजभाषा अधिकारी

परामर्श
श्री रोहित कुमार निरंजन
उप मुख्य राजभाषा अधिकारी

संपादक
पी.एस. बगड़वाल
वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी

उप संपादक
राकेश कुमार मालवीय
वरिष्ठ अनुवादक

सहयोग
राजभाषा विभाग

पत्राचार का पता
संपादक
राजभाषा सरिता
पश्चिम मध्य रेलवे
कार्यालय, इंदिरा मार्केट, जबलपुर (म.प्र.)
फोन : 0761-2627077, 54714 (रेलवे)

- सीमित संख्या में निःशुल्क वितरण के लिए
- पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं ।

अनुक्रमणिका

क्र.	शीर्षक	पृष्ठ
1.	यादें स्टेशन मास्टरी की	1
2.	समय-समय की बात	6
3.	बचपन खो रहा है	7
4.	ज्ञान की खान है पुस्तकें	10
5.	गला दर्द: कहीं टॉंसिल तो नहीं?	12
6.	हम कसम प्याज की खाते हैं.....	15
7.	नया साल 2020	17
8.	मनुष्य और उनका भविष्य	18
9.	मिस वेजिटेबल 2019	22
10.	नेता जी का हृदय परिवर्तन	23
11.	शिक्षा का दीपक	26
12.	परिवार	28
13.	शुभ मंगल हर साल	30
14.	ए जिंदगी जरा ! अकेले में मिल	31
15.	गिरवी कोख़	32
16.	ग़ज़ल	32
17.	छायाचित्र विथिका	33-38

मुख पृष्ठ -गणतंत्र दिवस 2020 के अवसर पर परेड का निरीक्षण करते हुए महाप्रबंधक, श्री शैलेन्द्र कुमार सिंह

राजभाषा संकल्प, 1968

(सदन के दोनों सदनों द्वारा दिसंबर, 1967 में पारित)

"यह सभा संकल्प करती है कि हिंदी के प्रसार एवं विकास की गति बढ़ाने हेतु तथा संघ के विभिन्न राजकीय प्रयोजनों के लिए उत्तरोत्तर इसके प्रयोग हेतु भारत सरकार द्वारा एक अधिक गहन एवं व्यापक कार्यक्रम तैयार किया जाएगा और उसे कार्यान्वित किया जाएगा।"

गृह मंत्रालय द्वारा दिनांक 18 जनवरी, 1968 को अधिसूचित

हिंदी सेवा जन सेवा है, जन सेवा ही देश सेवा है।

यादें स्टेशन मास्टरी की



गतांक से आगे ....

ननवारा स्टेशन

जबलपुर मंडल के झुकेही–कैमूर खण्ड पर एक छोटा–सा स्टेशन, स्टेशन मास्टर और मुझे लेकर कुल आठ कर्मचारियों का स्टाफ। करने के लिये कोई विशेष काम नहीं। कोई बाजार हाट नहीं। टी.वी. नहीं। अखबार नहीं। लेकिन नौकरी तो करनी ही थी। चाहे हँस कर करो या रोकर। चूने के पत्थरों के बीच में हमने अपनी अलग ही दुनिया बना ली थी। स्वर्गीय श्री एच.आर. मिश्रा स्टेशन मास्टर अत्यंत ही धार्मिक, सीधे और छल–कपट से दूर रहने वाले व्यक्ति थे। उन्होंने लगभग 6 माह तक मुझे अपने घर में बच्चों की तरह रखा और खाना खिलाया। मिश्रा जी ने पहले दिन से ही स्टेशन की चाबी मुझे सौंप दी थी और मेरे प्रतिरोध करने पर उन्होंने सीख दी कि रेलवे में ''पीछे देखो, आगे चलो'' का सिद्धांत लागू होता है। जब तक खुद के सारे काम नहीं करोंगे तो सीखोगे कैसे । ''स्टेशन की सारी व्यवस्था और लिखा–पढ़ी उन्होंने मेरे कंधे पर डाल दी। ऐसा सौभाग्य मेरे सिवाय मेरे बैंच के किसी भी स्टेशन मास्टर को नहीं मिला नौकरी के 'शुरूआती दौर से ही मेरे काम करने की क्षमता में जैसे पत्र लेखन और प्रबंधन क्षमता इत्यादि में जबरदस्त इजाफा हुआ। जिसने मेरी आगे की राह जो नौकरी में सफलता प्राप्त करने हेतु जरूरी थी। बहुत आसान कर दी। मैं नौकरी और नियमों के मामले में हमेशा से लड़ाकू प्रवृत्ति का रहा हूँ। नई–नई नौकरी में भी टी. आई., झुकेही के स्टेशन प्रबंधक और ए.ई.एन. इत्यादि से नियमों पर लड़ रहा था। श्री मिश्रा जी ने हमेशा मेरा साथ दिया और गलत होने पर प्यार से सही रास्ता दिखाया।

दो साल बड़ी ही बोरियत के दिन थे। चौबीस घंटे में चार माल गाड़ी चलती थी। कोई बाजार, सिनेमा हॉल इत्यादि कुछ नहीं। ग्राम सभा की मेहरबानी से 24 घंटों में दो चार घंटे बिजली मिल जाती थी। हाँ! रविवार को ''रामानंद सागर की रामचरित मानस'' के समय बिजली जरूर रहती थी। हम अपना छोटा–सा ब्लैक एण्ड व्हाइट टीवी बाहर निकाल कर रख देते थे और 100–150 मजदूरों की भीड़ लग जाती थी, रामचरित मानस देखने के लिये।

फोन, इंटरनेट इत्यादि की सुविधा नहीं थी, अतः हमें डाकिया का बड़ी शिद्दत से इंतजार रहता था। जब वो आता था तो उसे चाय नाश्ता कराया जाता था और लगे हाथ ही आयी हुई चट्ठियों का उत्तर भी उसे ही लिख कर दे दिया जाता था। उस समय 'शादी तय हो चुकी थी और मेरे साथ काम करने वाले सहायक स्टेशन मास्टर अनिल शुक्ला ने मुझसे पूछा ''क्या मैं श्रीमती जी को इस जगह पर लाऊँगा''। मैंने कहा ''हाँ कोई शक है क्या ? '' उसने हँसते हुये उत्तर दिया कि फिर तो तू सबसे लम्बी मधुरयामिनी मनायेगा। उस छोटे से स्टेशन पर कोई काम नहीं था।

जिस समय मेरी पोस्टिंग ननवारा में थी उसी प्रकार मेरे बैच के लगभग सभी स्टेशन मास्टर की पोस्टिंग ननवारा जैसे ही छोटे– छोटे स्टेशनों पर ही थी। छोटे स्टेशनों की अपनी अलग ही एक छोटी–सी दुनिया होती है। जबलपुर मंडल का ही कटनी–सिंगरौली रेल पथ जो कुछ ही साल पहले बना था के, अधिकांश स्टेशन जंगल के क्षेत्र में थे। ऐसा ही एक स्टेशन ''जोबा'' था। जहाँ पर मेरा मित्र श्री आर.पी. सिंह पदस्थ था। एक दिन वो अपनी पत्नी के साथ हमसे मिलने घर आया। बातों ही बातों में उसकी पत्नी ने एक बड़ा मजेदार किस्सा सुनाया। जोबा स्टेशन पर उसके घर में घरेलू काम करने के लिये जो नौकरानी थी उसने श्रीमती सिंह से पूछा कि ''साहब की कितनी बीबियां है'' श्रीमती सिंही अंचभित रह गयी और उन्होंने पूछा ''क्या मतलब है तुम्हारा। '' तो उस नौकरानी ने बताया कि उनके इलाके में सारे बड़े आदमी कई–कई शादी करते हैं और एक से अधिक बीबी रखना सामान्य सी बात है। और साहब तो स्टेशन मास्टर है सरकारी नौकरी में हैं और भी शादियां की होगी।'' उस नौकरानी को विश्वास ही नहीं हो रहा था कि ''इतना बड़ा सरकारी नौकरी वाला केवल एक ही बीबी रखे है।'' और उस समय मध्य प्रदेश के आदिवासी छोड़िये शहरी इलाकों में भी यह सामान्य बात मानी जाती हैं हम लोग यानि कि मैं और श्रीमती जी खूब हंसे, लेकिन मैंने महसूस किया कि श्रीमती अनेक दिनों तक टेंशन में रही । अक्सर पूछती थीं कि ''क्या यूपी के साइड ट्रॉंसफर नहीं हो सकता।

उन दिनों जबलपुर मंडल में स्टेशन मास्टर संवर्ग में लगभग 30 प्रतिशत पद रिक्त थे। अतः आसानी से छुट्टी मिलना तो दूर साप्ताहिक विश्राम भी नियमित रूप से नहीं मिलता था। अतः निरंतर ओवर टाइम काम करना पड़ता था। वेतन के अतिरिक्त ओवर टाइम का अलग से भत्ता होता है। ओवर टाइम में भत्ता वेतन से दुगुना मिलता है।

अतः ओवरटाइम से भरपूर पैसे मिल जाते थे। फिर भी क्षमता के अनुसार काम ना मिल पाने के कारण बड़ी बोरियत होती थी। मन हमेशा करता था कि बड़े और व्यस्त स्टेशन पर पोस्टिंग हो ताकि काम करने का मजा आये। खाली समय का सदुपयोग करने कि मैंने स्टेशन पर एक बगीचा विकसित करना शुरू किया और रेलवे के विभिन्न नियमों को पढ़ना चालू किया। धीरे–धीरे ननवारा स्टेशन पर एक बहुत अच्छा बगीचा विकसित हो गया कि लोग उसे देखने आने लगे और वहाँ पर मैंने पेड़ भी खूब लगाये। 1991 के बाद मैं सन् 2005 में एक बार ननवारा स्टेशन का निरीक्षण करने गया तो बड़े पेड़ों को सुरक्षित देख हर्ष हुआ लेकिन बगीचा खत्म हो चुका था।

ननवारा स्टेशन पर मैंने एक क्रेडिट सोसाइटी करीब दो साल तक चलाई। मैंने यह क्रेडिट सोसाइटी यह सोच कर चलायी थी कि मैं गरीब चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों को सूदखोरों के चंगुल से बचाऊंगा, लेकिन मैं इसमें बुरी तरह से असफल रहा। यह क्रेडिट सोसाइटी चलाते समय मैंने पाया कि उधार लेना एक नशा सा होता है। यदि किसी व्यक्ति को एक बार उधार लेने की लत पड़ जाये तो वह व्यक्ति इसे छोड़ नहीं पाता है। चाहे आप कितना भी प्रयत्न कर लें। मुझे उस समय दो या तीन महीने ही नौकरी शुरू किये हुए हुआ था। मैं हर पगार के दिन कुछ बाहरी लोगों को स्टेशन पर देखता था जो दुबारा अगले पगार के दिन ही दिखायी देते थे। मेरे पता करने पर लोगों ने बताया कि ये लोग महाजन है। और वसूली करने आये हैं। मैंने पाया कि ये महाजन किसी –किसी कर्मचारी की 80 प्रतिशत तनख्वाह तक ब्याज में छीन लेते थे। मैंने प्रयत्न करके अपनी क्रेडिट सोसायटी से पैसे दे, पुलिस की धमकी दे और अपने प्रभाव का इस्तेमाल कर ननवारा और महगांव के उस समय के कुछ कर्मचारियों को ऋण मुक्त करवाया। लेकिन कुछ महीने बाद वो सूदखोर फिर से दिखाई देने लगे। जब उनसे मैंने बात की तो उन्होंने मुझे बताया '' सर आप बेकार में परेशान हो रहे हैं ये लोग इसी तरह जीते हैं। अपने इनके पुराने लोन तो खत्म करवा दिये पर ये लोग नए लोन के लिये हमारे पास आ गये। हम तो इन्हें लोन देंगे ही। यह हमारा धंधा है।''

कुछ दिन बाद एक घटना और घटित हुई। जिसके कारण मैंने इस तरह का सामाजिक परोपकार का कार्य करना बंद कर दिया। हुआ यूँ कि एक सूदखोर एक पॉइंट्समैन को मार रहा था और गाली दे रहा था। बीच बचाव करने पर सूदखोर ने बताया कि यह पॉइंटमैन उसके पैसे नहीं दे रहा है। जबकि वो पॉइंटमैन 500/– रूपये के लोन के एवज में 1800/– दे चुका था। मैंने जब उस पॉइंटमैन से पूछा कि तूने लोन क्यों लिया था तो उसने कहा '' बेटे का जन्मदिन मनाने के लिये।'' मेरे यह कहने पर कि ''भाई लोन लेकर बर्थ डे मनाने की क्या जरूरत थी।'' तो वो बोला ''साहब ये सब तो करना ही पड़ता है।'' 500/– रूपये का बर्थ –डे मनाने में कैसे उपयोग हुआ, आप जानेंगे तो आश्चर्य चकित रह जायेंगे। पहली बात तो सूदखोर ने 500/– में से 100/– एडवांस ब्याज काट 400/– ही दिये थे। 100/– में शाम को घर पर गाने बजाने के लिये बड़ा स्टीरियों किराये में लिया। बाकी तीन सौ में से 100/– रूपये की देशी शराब, 100/– रूपये का मटन और 100/– रूपये की मिठाई लाया था। घर पर शराब और मटन की पार्टी हुई थी, उस पार्टी में शामिल होने वाले वह सूदखोर और उसके तीन चमचे थे।

मैंने बहुत बार छोटे स्तर पर ही सही व्यक्तिगत रूप से इन सामाजिक बुराईयों से लड़ने की कोशिश की। अपनी ओर से चाहा कि समाज और देश से जो मैं प्राप्त कर रहा हूँ। उसका एक हिस्सा, छोटा ही सही, तो वापस समाज और देश को वापस दूँ। पर कुछ पारिवारिक उत्तरदायित्व,कुछ सरकारी उत्तरदायित्व और उनसे बढ़कर शायद मुझमें लड़ने का पूरी तरह से माद्दा न होने के कारण बढ़े हुए कदम वापस खींचने पड़े, जिसका मुझे सदा अफसोस रहेगा।

ननवारा स्टेशन के पास कैमूर में एसीसी की सीमेंट फैक्ट्री थी वहाँ की कालोनी में छोटा–सा बाजार था जो काम चलाऊ ही था। हरी सब्जी और फल साप्ताहिक बाजार वाले दिन ही मिलते थे। हाँ! वहाँ पर मछली बहुत अच्छी और सस्ती मिलती थी। वहाँ पर कई पुरानी खदानें थी। जिनमें पानी भर गया था और मछली खूब पैदा होती थी। स्टेशन मास्टर होने के

कारण मुझे मछली तो फ्री में ही मिल जाती थीं। लेकिन समास्या यह थी कि मेरे वरिष्ठ स्टेशन मास्टर श्री मिश्रा जी पूर्ण शाकाहारी थे। और किसी भी तरह के नानवेज खाने वाले या नशा करने वाले से दूर रहते थे। हमारे क्वार्टर की दीवार साझा थी। अतः जब भी हम चोरी छिपे नॉनवेज बनाते थे तो उस दिन हमारे घर मैं अगरबत्ती के कई पैकेट नॉनवेज की खुशबू छिपाने में खर्च हो जाते थे।

झुकेही स्टेशन –

ननवारा स्टेशन पर दो साल कार्य करने के बाद मेरा स्थानांतरण पदोन्नति पर झुकेही स्टेशन हो गया। स्टेशन काफी बड़ा था। खूब काम भी था। झुकेही में गार्ड ड्राइवर का एक छोटा–सा डिपो भी था। पैसेंजर ट्रेन के साथ मेल एक्सप्रेस ट्रेन का स्टापेज होने के कारण स्टेशन पर चौबिसों घंटे चहल पहल रहती थी। स्टेशन पर रेलवे के लगभग पचास क्वार्टर और दस पंद्रह प्राइवेट लोगों के मकान थे। यहाँ पर भी न टीवी, ना सिनेमा और ना अखबार कुछ भी नहीं था। हाँ, मेन लाइन पर स्टेशन होने के नाते, कटनी जो लगभग 25 कि.मी. दूर था। आने–जाने की सुविधा थी। लगभग पचास रेलवे परिवार झुकेही में रहते थे। अतः अकेलापन महसूस नहीं होता था। स्टेशन पर हम तीन जूनियर सहायक स्टेशन मास्टर, एक काफी वरिष्ठ स्टेशन प्रबंधक और दो प्रौढ़ सहायक स्टेशन मास्टर थे। श्रीमती जी ने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि उन्हें ननवारा और झुकेही जैसी बियावान जगहों पर भी रहना होगा। सिनेमा, होटल, टीवी, अखबार इत्यादि कुछ नहीं होगा। अतः उन्हें उस समय कटनी और जबलपुर, लंदन पैरिस लगते थे।

ननवारा और झुकेही से सप्ताहिक विश्राम के दिन हम दोनों लोग कटनी जाते थे। राशन, सब्जी और अन्य जरूरी सामान खरीदने। उस दिन हम दोनों लोग सुबह–सुबह कटनी पहुँच जाते थे और दिन भर कभी चाट, कभी डोसा तो कभी बिरयानी और मार्केट में जो कुछ मिलता था । घूमघूम कर खाते रहते थे। सिनेमा देखते थे। क्योंकि हमें मालूम था अब ये सब चीजें कम से कम एक हफ्ते बाद ही नसीब होगी। यदि अगले हफ्ते कोई एस.एम. ना आया या छुट्टी पर हुआ तो शायद दो हफ्ते भी हो जाये। कटनी से आने के बाद दो दिन तक दोनों टाइम दो –दो हरी सब्जी बनती थी और फिर उसके बाद आलू प्याज ही रह जाता था। क्योंकि बिजली आती कम जाती अधिक थी अतः फ्रिज का रहना ना रहना एक बराबर था।

झुकेही स्टेशन पर मेरी मुलाकात एक ऐसे दम्पति से हुई जिनमें कहें तो बहुत कमियां थी। पर उनकी खूबियों के सामने वो कमियां ऐसी थी कि जैसे पहाड़ के सामने राई का एक दाना। उनकी खूबियों ने मुझे बिन मोल खरीद लिया था। स्वर्गीय श्री अनिल वैस्ली वरि. स्टेशन मास्टर और स्वर्गीय श्रीमती ललिता वैस्ली। क्या ही शानदार जोड़ा था किसी की सेवा, प्यार और देखभाल करने में किसी भी हद तक जा सकते थे। ये दोनों अपने तन के कपड़े तक उतार कर दान दे देते थे। जब तक वो झुकेही में रहे। झुकेही स्टेशन पर कभी कोई भूखा नहीं सोया। सेवा भाव का जो जज्बा ईसाई मिशनरी में होता है। वो इस ईसाई दम्पति में था। अब तो यादें शेष हैं।

स्वर्गीय वैस्ली जी की माताश्री जो उस समय करीब नब्बे वर्ष की एवं एग्लो इंडियन थी ने, हमें सिखाया कि बच्चे कैसे पाले जाते हैं। उनका कहना था बच्चों को अपना काम और खाना इत्यादि खुद करने दो। उनकी स्पून फीडिंग मत करों। मेरी बेटी 03.03.1991 को झुकेही स्टेशन पर पदस्थापना के समय ही पैदा हुई थी।

झुकेही स्टेशन सांपों के लिये बदनाम था। एक बार मेरे क्वार्टर में लगातार एक हफ्ते तक विषैले सांप निकले फिर मेरे दूध वाले ने मुझे एक जड़ी–बूटी लाकर दी और बोला कि इसे कोरे कपड़े में बांध कर दरवाजे पर लटका दे सांप नहीं आयेगा। और सचमुच उसके बाद लगभग एक साल तक हम वहाँ रहे और कभी कोई सांप नहीं दिखाई दिया। विश्वास करने योग्य बात नहीं हैं। परंतु झुकेही में मेरे साथ भी ऐसा हुआ जिसने ईश्वर की सत्ता और सत्यता पर मेरा विश्वास और मजबूत कर दिया।

आप जिस मकान में वर्षों से रहते हैं, जहाँ रोज काम करते हैं, जिस रास्ते का वर्षों से उपयोग करते हैं, उस जगह की एक–एक गिट्टी आपको पहचानने लगती है और आप वहाँ अंधेरे में भी आँख मूंद कर चले जाते हैं। कोई डर नहीं कोई

सावधानी नहीं। हुआ यूँ कि एक दिन में 12:00 बजे से 24:00 बजे की शिफ्ट में कार्य कर रहा था। गर्मी के दिन थे शाम 20:00 बजे के लगभग बिजली चली गयी थी। मैंने स्टेशन स्टॉफ से कहा कि गर्मी बहुत है। मैं अपने क्वार्टर की खिड़कियां जाकर खोल देता हूँ ताकि डियूटी के बाद जब पहुँचूं तो क्वार्टर में ठंडक रहे। श्रीमती जी उस समय अपने मायके गयी थी। वहाँ पर एक चपरासी ने मुझे अपनी टार्च पकड़ाते हुये कहा कि '' साहब अंधेरा है इसे ले जाओ। '' पहले तो मना किया पर उसके दुबारा कहने पर टार्च ले ली। क्वार्टर पहुँच कर मैंने दरवाजा खोला और क्वार्टर में घुसने से पहले, मेरे मन में पता नहीं क्या विचार आया कि मैंने टार्च ऑन कर दरवाजे पर खड़े हो सामने देखा। सामने जो दिखायी दिया उसे देख मेरी चीख ही नकल गयी। करीब छः फुट का एक किंग कोबरा सामने नजर आया। पूरा फन खोलकर जमीन से दो या तीन फुट ऊपर तक तना हुआ था। मेरी चीख सुनकर पड़ोसी दौड़ कर आ गये और उन्होंने बड़ी मुश्किल से उस किंग कोबरा को मारा। ड्यूटी खत्म करने से पहले घर जाने का विचार आना और चपरासी द्वारा टार्च ले जाने के लिये जिद करना क्या संयोग मात्र थे या पूर्व निर्धारित नियति। क्योंकि रात के एक बजे लगभग 13 घंटे की कड़ी ड्यूटी के बाद सीधे बिस्तर ही दिखायी देता है और कुछ नहीं।

झुकेही में सभी स्टेशन मास्टर, ड्राइवर गार्ड इत्यादि सभी लगभग हम उम्र थे। रोज –रोज पार्टी होती थी और बड़ा ही पारिवारिक माहौल था। शर्त लगा कर रमी के दौर पर दौर चलाते थे। शर्त भी कैसी ''जो हारेगा वो झुकेही मोड़ से रसगुल्ले लाकर सबको खिलायेगा लेकिन खुद नहीं खायेगा।'' मुर्गे की पार्टी की इतनी शर्तें लगीं कि आसपास के गांवों में देशी मुर्गे खत्म होने की नौबत आ गयी।

झुकेही में काम का मजा उस दौर में कुछ और ही था। लोडिंग स्टेशन और यार्ड होने के कारण भरपूर काम रहता था। ननवारा स्टेशन पर स्वर्गीय श्री एच. आर. मिश्रा जी ने सैद्धांतिक रूप से मुझे काफी कुछ मजबूत कर अच्छी बुनियाद दे दी थी। झुकेही में रेल परिचालन के प्रेक्टिकल रूप से स्वर्गीय श्री वैस्ली जी ने अच्छा परिचय कराया और जो मैं आज हूँ उसकी झुकेही में रहने के दौरान अच्छी नींव पड़ गयी थी। बहुत मजा आता था झुकेही में लेकिन बेटी की पढ़ाई और सिटी लाइफ के आकर्षण के कारण मैंने स्वयं के अनुरोध पर जबलपुर स्थानातंरण करवा लिया।

जबलपुर –

लगता है जबलपुर शहर मुझमें बस गया है या मैं जबलपुर शहर में समा गया हूँ। कह नहीं सकता लेकिन इतना जरूर हैं कि जबलपुर शहर मेरी नियति का एक हिस्सा बन गया है जहाँ से हर तीन या चार साल गुजरने के बाद स्थानांतरित हो जाता हूँ और पुनः 3 साल बाद आ जाता हूँ । अब तो ऐसा लगता है, जुलाई 2024 में सेवा निवृत्ति के बाद यहीं पर रह जाऊंगा।

जबलपुर शहर में पहला प्रवास 1992 से 1998 तक का रहा आर्थिक परेशानी, समस्याओं, दुःख, सुख और खुशी संघर्षों का वह मिला–जुला अद्भुत दौर था। जबलपुर जैसे शहर में सहायक स्टेशन मास्टर का वेतन, आर्थिक परेशानियां तो होनी ही थी। आधे से अधिक वेतन मकान किराये, दूध और बिजली के बिल में ही निकल जाता था। लेकिन रेलवे से बाहर बने रिश्तों ने जबलपुर प्रवास को स्मरणीय बना दिया। आज से 25 साल पहले बुआ, भाई, बहन, नाना, नानी, चाचा इत्यादि के जो नये रिश्ते अजनबियों के साथ बने वो आज भी उसी गर्म जोशी से बरकरार है और हाँ 1996 में पुत्र रत्न की प्राप्ति भी तो इसी शहर में हुई थी ।

स्वर्गीय श्री तीरथ दास मखीजा रिटायर्ड रेलवे गार्ड से जबलपुर में मुलाकात ने मेरी दिशा, दशा, ज्ञान, पर्सनालिटी में सब कुछ बदल दिया। आज जो कुछ भी हूँ मैं, उसमें 90 प्रतिशत आपके द्वारा दिये हुये ज्ञान के कारण ही है। बंटवारे में सिंध से हिन्दुस्तान आये थे। सिर्फ दसवीं क्लास पास थे। लेकिन आपके अंग्रेजी और प्रशासनिक कानूनी ज्ञान के आगे बड़े–बड़े सुप्रीम कोर्ट के वकील भी नहीं ठहरते थे। आप रेलवे की जीवित इंसायक्लापीडिया थे और हजारों रेलकर्मियों की नौकरी आपने बचायी थी । कभी भी किसी कर्मचारी से कानूनी सलाह के एवज में एक भी पैसा नहीं लिया। आप दूसरे केन्द्रीय विभागों में कर्मचारियों को कानूनी सलाह देने जाते थे। अपनी मृत्यु से पहले अपनी बहु को बुलाकर निर्देश दिया कि ''मेरे बाद मेरी पूरी

लाइब्रेरी सुवीर को दे देना। इसका वही उत्तराधिकारी हैं। ''कर्मचारियों की सहायता कर उनका कार्य मैं अपने स्तर पर पूरी श्रद्धा से आगे बढ़ा रहा हूँ।

जबलपुर में आकर मैं ट्रेड यूनियन की तरफ आकर्षित हो गया और ''अखिल भारतीय स्टेशन मास्टर संघ'' का ''मंडल सचिव'' बन गया तथा ''मध्य रेल कर्मचारी परिषद'' का भी पदाधिकारी बन गया। मेरे नेतृत्व में 11.08.1996 को स्टेशन मास्टर्स ने ''गो स्लो'' हड़ताल की थी जो जबलपुर मंडल में शत–प्रतिशत सफल रही थी।

अगस्त 1996 में पंचम वेतन आयोग के समय 'गो स्लो' हड़ताल के लिये मैंने बहुत ही मेहनत की थी। मैंने अपनी नौकरी दांव पर लगा दी थी क्योंकि स्टे. मा. को संगठित करना खुले तराजू में मेढ़क तौलने जैसा होता है। खैर! मेरे आव्हान् पर जबलपुर मंडल के सभी स्टेशन मास्टर ने पूर्ण सहयोग दिया। सफल हड़ताल के बाद बारी थी प्रशासन के वार की। सामान्यतः स्थानान्तरण कर दिया जाता है। हम लोग प्रशासन के इस कदम के विरोध में कैंट जबलपुर चले गये। सामान्यतः स्थानान्तरण को प्रशासनिक कार्य मान कर न्यायालय इसमें दखल नहीं देता है। जब रिट एडमीशन के लिये बहस हो रही थी उस समय ज्यूडीशियल मेम्बर ने हमारे वकील की बात सुनने से इंकार कर दिया और दूसरे केस को प्रस्तुत करने के लिये बोलने लगा। मैं एकदम से हतप्रत रह गया कि यह क्या हो गया और बाजी हारते देख मैं उठ खड़ा हुआ '' मीलार्ड'' बोल कर रिट के पांइट बोलने लगा और नजीर प्रस्तुत करने के लिये कई लॉ रिपोर्ट, केस ले गया था वो किताबें खोल–खोल कर जज के डायस पर रखने लगा। वकील और दूसरे लोग मुझे पीछे खींचने लगे, पर मुझ पर जुनून सवार था क्योंकि यदि स्टे नहीं मिलता तो हम बहुत परेशानी में पड़ जाते। प्रशासन हम लोगों को नौकरी से निकालने का मन बना चुका था। जज ने मुझे गौर से देखा और फिर बोला '' मिस्टर एडवोकेट प्लीज प्रोसीड'' और इतना सुनते ही मेरी जान में जान आ गयी और मैंने चुपचाप बेंच के आगे सिर झुकाया और वापस आकर अपनी कुर्सी पर बैठ गया। जज ने तुरंत ही स्टे दे दिया और बाद में स्थानातंतरण आदेश रद्द कर दिया। प्रशासन की फिर कभी मुझे नुकसान पहुँचाने की हिम्मत नहीं हुई, जिसके नाम से यह केस जबलपुर कैंट में था और 20 अक्टूबर 1996 को फैसला हुआ था।

जबलपुर स्टेशन पर सहा. स्टे. मा. के कार्यकाल के दौरान मैंने अनुशासन और अपील नियमों पर खूब मेहनत की। उन्हें समझने का प्रयत्न किया और प्राप्त ज्ञान से कई कर्मचारियों की नौकरी बचाने में सफलता प्राप्त की। मुझे कहते हुये शर्म–सी आ रही है। लेकिन सच है उस समय मेरा और मेरे साथियो का अधिकारियों पर आतंक कायम हो गया था। हमारे डी. आर. एम. ऑफिस पहुँचते ही कई अधिकारी डी.आर.एम. ऑफिस से चले जाते थे। एक बार हम पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार मिलने का समय लेकर डी.आर.एम से मिलने पहुँचे। डी.आर.एम. साहब और अन्य अधिकारी डी. आर. एम ऑफिस छोड़कर चले गये। हमने डी.आर.एम को मजबूर कर दिया और फिर उन्होंने ए.डी.आर.एम को बात करने के लिये भेजा। स्टेशन मास्टर एसोशिएशन रेलवे प्रशासन से मान्यता प्राप्त नहीं थी। अतः रेलवे प्रशासन से मान्यता प्राप्त संगठन हमेशा हमारे विरोध में प्रशासन का साथ देते थे।

मुझे दोनों मान्यता प्राप्त मजूदर संगठनों से बार –बार निमंत्रण मिलता था कि मैं उनके संगठन का पदाधिकारी बन जाऊँ लेकिन मेरा मानना था कि सरकारी सुविधा, पास, छुट्टी, मनपंसद पद पर पोस्टिंग, इत्यादि को लेकर कोई भी मजदूरों के हित में बात नहीं कर सकता है। मेरा कई रेलवे अधिकारियों से व्यक्तिगत संपर्क रहा है। उस समय के सभी रेलवे अधिकारियों ने अकेले वन–टू–वन मीटिंग में मेरी प्रशंसा की। एक अधिकारी ने तो मुझसे मेरा स्थानांतरण करने हेतु माफी भी मांगी। उस समय के प्रत्यक्ष रूप से मेरे दुश्मन घोषित अधिकारी भी जब अपनी सहायता के लिये व्यक्तिगत रूप से मुझसे सलाह लेते रहते थे। इस इज्जत के पीछे सालों साल की मेहनत थी। मैंने ड्यूटी में कभी कोताही नहीं बरती। और जब कर्मचारियों की चार्जशीट का उत्तर देने में उनकी सहायता करता था । मैंने किसी से भी एक पैसे का फायदा नहीं लिया। मैंने नौकरी अपनी जीविकोपार्जन के लिये की थी न की पैसा कमाने और नेतागीरी के लिये। 1998 में वर्क स्टडी सेल में उच्च वेतन में पदोन्नति होने के कारण मुझे भुसावल पदस्थ पर कर दिया गया और मैं जबलपुर मंडल छोड़कर 1998 में भुसावल चला गया। भुसावल मंडल में वरिष्ठ कार्य पर अध्ययन निरीक्षक के पद पर मेरा स्थानातंरण होने के कारण मुझे स्टे. मा. संवर्ग से हट

जाना पड़ा और फिर भुसावल से मैं एल. डी.सी. परीक्षा उर्त्तीण कर अधिकारी बन गया। 16 फरवरी 2000 को मेरा भुसावल से स्थानांतरण सहायक मंडल परिचालन प्रबंधक (यात्री यातायात) के पद पर सोलापुर हो गया।

अक्सर हम लोग जीवन के वर्तमान काल खण्ड की तुलना बीते हुये कल से करते है और दुखी होकर कहते है पहले का समय बहुत अच्छा था। मैंने कभी भी बीते हुये कल की तुलना आज से नहीं की है क्योंकि मेरा मानना है कि हर काल खण्ड में सुविधायें, चुनौतियाँ और चाहतें बदलती रहती हैं। ऐसे ही एक बार मित्रों के साथ चर्चा में एक मित्र ने अपने पुराने समय की चर्चा करते हुये कहा कि वो समय बहुत अच्छा था। मैंने तुरंत उत्तर दिया कि हाँ! उस समय ''नेट स्लो नहीं था।'' मेरे मित्र ने मुंह बना लिया क्योंकि वो मेरी बात का आशय समझ गये थे। मित्र महोदय फेसबुक, ट्विटर इत्यादि के नशेड़ी है और उनकी बातें शुरू और खत्म ''नेट बहुत स्लो चल रहा है'' से होती है।

देखिए अब न याद आइए आप।
आज कल आप से ख़फा हूँ मैं ।।

सुवीर श्रीवास्तव
उप मुख्य परिचालन प्रबंधक (गुड्स)
मुख्यालय, जबलपुर

समय -समय की बात

आज हम अपनें बच्चों की आदतों के बारे में बात करते हैं बच्चों का शिशु अवस्था से युवावस्था तक का सफर पता ही नहीं चलता कि कब समय निकल गया। बच्चे बड़े होते–होते जब घर से बाहर जाने लायक हो जाते हैं तब वे सामाजिक होना आरंभ कर देते हैं, उनमें चरित्र निर्माण एवं परिवर्तन का दौर दिखने लगता है। वे अब भौतिकवादी पूंजीवादी एवं अन्य सोचों से अभिभूत होना शुरू कर देते हैं। दुनिया रंग –बिरंगी दिखती है, जिसे वे सच समझाने की भूल कर बैठते हैं, क्योंकि यहीं से भटकाव की स्थिति बनना शुरू हो जाती है। फिर बच्चों को समझाना अभिभावकों के लिए कठिन हो जाता हैं और बच्चों व अभिभावकों के बीच असामान्य स्थिति निर्मित होने लगती है, यह लगने लगता है कि वह पुराने दिन ही अच्छे थे। इनमें से कुछ बच्चे तो वास्तविकता को समझ जाते हैं एवं उसी दिशा में अग्रसर होने लगते हैं, जिससे अभिभावकों में सतुंष्टी का भाव आ जाता है, फिर आगे जो भी परिणाम हों।

एक अभिभावक होने के नाते हमारा भी यह दायित्व बनता है कि हम अनायास ही अपनी सोच को बच्चों पर न लादे। हर एक बच्चा अपने आप में श्रेष्ठ होता है, हर एक का अपना क्षेत्र होता है जिसमें केवल वह ही मास्टर होता हैं कभी –कभी अति महत्वाकांक्षी होना नुकसानदायक भी हो सकता है। यह एक सोच का विषय है, हो सकता है इससे कई लोग स्वीकारोक्ति नहीं रखेंगे। फिर भी ये है तो एक आम सोच।

श्रीनिवास राव
मुख्य जाँच निरीक्षक (सतर्कता)
प. म. रे.,जबलपुर

बचपन खो रहा है





बच्चे ईश्वर का रूप होते हैं, यह धारणा हमारे समाज के अन्तर्मन में व्याप्त है। जीवन का प्रथम सोपान है बचपन। शैक्षणिक मनोविज्ञान के एक प्रसिद्ध विद्वान का कथन है कि चार वर्ष की अवस्था में ही मनुष्य के संस्कारों का अस्सी प्रतिशत निर्धारण हो जाता है, उसके पश्चात तो शिक्षा से मात्र सूचनाओं का ही एकत्रीकरण होता है। अतः मानवीय जीवन की आधारशिला की स्थापना इसी बाल्यकाल में ही होती है। हमारी आध्यात्मिक और धार्मिक परम्परा भी भगवान के बालरूप का ही पूजन करने की रही है। अयोध्या में रामलला का बालरूप ही पूजित है। इसी प्रकार हमारे मूलस्थान मथुरा में बालकृष्ण या लड्डू गोपाल के विग्रह का पूजन हमारे अल्हाद (भाव) में वृद्धि करता है। सभी परिवारों में भी लड्डू गोपाल का चित्र या मूर्ति, पूजा के सिंहासन में अवश्य ही शोभित होती है।

नवरात्रि के पुनीत पर्व पर कन्या लंगुरा को सस्नेह भोजन कराने की परंपरा भी हमारी बचपन को सहेजने की स्वाभाविक प्रवृत्ति का अनुमोदन करती है। बच्चों को देखते ही मानवीय हृदय में स्नेह का ज्वार उठना सहज भाव है। बच्चों का हमारे प्रेम पर जो अधिकार है, क्या वह भविष्य में भी ऐसा ही अविरल बना रहेगा ? यह प्रश्न कई बार मन ही मन घुमड़ता है।

कालचक्र के परिवर्तन को कौन नकार सकता हैं संभव है कि इस शताब्दी में कालचक्र की गति बीसवीं सदी से अधिक तीव्र हो। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में परिवर्तन का चक्र तीव्रतर गति से घूम रहा है। प्रायः देखा जाता है कि गति के व्यामोह (अज्ञान) में हम मन के आनंद को खो देते हैं। कहीं ऐसा ही हम बचपन के साथ तो नहीं कर रहे ? आज के बच्चों के जीवन में अपने बचपन के दिनों की तुलना करें तो पाएँगे कि हमारी अपेक्षा आज बच्चों के पास सुख के साधन अधिक हैं। उनके पास बचपन की कल्पनाओं को विस्तार देने के लिए खिलौनों और बालगीतो, बाल कहानियों के ऑडियो, वीडियों के संचित भंडार भी पहले की अपेक्षा अधिक है, किन्तु क्या बच्चों की इस नई पीढ़ी के पास बचपन का नैसर्गिक सुख या आनंद भी पहले की अपेक्षा अधिक है? मेरा मन कहता है कि जिस प्रकार सुख के साधनों की वृद्धि से सुख नहीं बढ़ा है, उसी प्रकार बचपन को सहेजने के साधनों के विस्तार के बाद भी बचपन खोता जा रहा है।

आवश्यकता इस बात की है कि विचार किया जाए कि वे कौन से गुण हैं जो बच्चों को बच्चा बनाते हैं। मुझे लगता है कि बचपन का पहला गुण सरलता है,जिस प्रकार साहित्य में सरल होना सबसे कठिन है वैसे ही जीवन में भी सरल होना सहज नहीं है। बच्चों में दूसरा गुण संभवतः अंहकारहीनता का होता हैं बच्चे प्रायः कुछ ऐसे काम भी कर जाते हैं जो किसी वयस्क व्यक्ति के लिए कर पाना संभव नहीं होता, क्योंकि स्वार्थ का भाव रोक लेता हैं। निर्मल हास्य भी एक ऐसा ही गुण है जो अब केवल बचपन की थाती होकर ही रह गया हैं। स्वार्थ के आवरण में लिपटा हास्य या मुस्कान समझ में आ ही जाती है। बचपन का उल्लास एक ऐसा गुण है। जिसने हमारी उत्सवधर्मिता को अभी भी जीवित रखा हुआ है। एक और विशिष्टता जिसका उल्लेख किया जाना आवश्यक है वह है भावों का स्वस्फूर्त प्रकटीकरण मैंने कहीं पढ़ा था कि आधुनिक शिक्षा हमें अपनी भावनाओं को छिपाने में पारंगत बनाती है। बच्चों में एक और नैसर्गिक गुण होता है कि वे निश्छल प्रेम को तुरंत पहचान लेते हैं। मैंने अपनी एक कविता में लिखा था –

आप को भ्रम हो भले ही, स्नेह के स्पर्श को लेकर,

किन्तु बच्चों को पता है नेह की छुअन और, अनुराग की चितवन का ।



बच्चा स्वाभाविक रूप से अन्तर्मुखी हो या बहिर्मुखी, किन्तु खेलों के प्रति वह अपने आकर्षण को छिपा नहीं पाता। सामूहिक खेलों में बच्चे अपने समवयस्कों के साथ इस प्रकार घुलमिल जाते हैं कि उनके पसीने की सुगंध में प्रेम की मधुगंध भी स्वाभाविक रूप से समाहित हो जाती है।

पश्चिमी सभ्यता और संस्कृति के सहज विस्तार के साथ भारतीय समाज में हमारे नैतिक मूल्यों का बहुत क्षरण हुआ है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विकृतियाँ बढ़ी है। साहित्य, कला, संगीत और लोकमानस भी समान रूप से विकृत हुआ है। परिणामस्वरूप मानवीय जीवन में यौन विकृतियों ने भी वीभत्स रूप धारण कर लिया है। यौन कुंठित नरपिशाच गली–गली घूम रहे हैं। बच्चों के साथ बलात्कार और फिर उनकी नृशंस हत्याओं की घटनांए दैनिक समाचार पत्रों की सुर्खियाँ बन कर प्रतिदिन मन में एक हाहाकार की सृष्टि करती है। जिन अल्पवयस्क बच्चियों की हत्या हो जाती है, वे तो संभवतः अपने आगत जीवन में प्रतिपल मरने की वेदना से मुक्त हो जाती हैं, किन्तु जो बालिकाएं इस पैशाचिक कृत्य के पश्चात जीवित रह जाती है, उनकी पथराई आँखो में तो जीवन का कोई चिह्न शेष नहीं रह जाता है।

बच्चों का बचपन निरंतर खोता जा रहा है, इसमें तो कोई संदेह ही नहीं है। खोते हुए बचपन को लौटा लाने के कुछ उपाय हो सकते है क्या? आज इस पर विचार की महती आवश्यकता है। पचास वर्ष पहले बच्चों की किलकारियों से गूंजता हमारा परिवेश आज उनकी चीखों से भरा है। अभिभावक भयभीत है। ''बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओं'' के राष्ट्रीय अभियान के बीच बेटियाँ के माता–पिता प्रतिपल उनकी सुरक्षा के प्रति चिंतित है। विद्यालयों में बच्चों को ''गुड टच और बैड टच'' के बीच अंतर की बारीकियां समझाई जा रही है, किन्तु क्या इस प्रशिक्षण के माध्यम से इन कोमल मन मस्तिष्क के बच्चों के हृदय में शंका और संदेह के काँटो के बियाबान जंगल नहीं उगाए जा रहे ?

मेरी दृष्टि में हमारी अनेक वर्तमान पारिवारिक और सामाजिक समस्याओं के मूल में संयुक्त परिवारों का निरंतर विघटन एक मुख्य कारण है। पहले एक ही संयुक्त परिवार में 20–25 व्यक्तियों का होना जो सुरक्षा कवच प्रदान करता था, क्या वैसी सुरक्षा कोई भी जीवन बीमा प्रतिष्ठान प्रदान कर सकता है? सुरक्षा के अतिरिक्त पारस्परिक प्रेम, सद्भाव और सहकार का जो वातावरण संयुक्त परिवारों में संभव था, क्या वह तथाकथित एकल परिवारों में हो सकता है? बच्चे जल्दी वयस्क हो रहे हैं। बचपन के छीने जाने का एक और बड़ा कारण इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और फिल्मों के माध्यम से मनोरंजन के नाम पर अनैतिकता के व्यापक प्रसार को भी जाता है। अब बच्चों के हाथों में मोबाइल फोन, लैपटॉप तथा टेबलेट के सहारे इंटरनेट की इतनी खिड़कियाँ खुल गई है जो उन्हें उम्र से पहले यौनजीवन के ऐसे मोहक इन्द्रजाल में उलझा लेती हैं कि वे चाह कर भी पुनः अपने बचपन में लौट पाने में स्वयं को असमर्थ पाते हैं। तो क्या हम हताश होकर बैठ जाएं ? मैं निराशावादी व्यक्ति नहीं हूँ काल की इस गुहा में कितना ही गहन अंधकार क्यों न हो, मन में आशा और सफलता का विश्वास लेकर दृढ़ता से आगे बढ़ें तो सूर्य किरणों के दर्शन अवश्य होंगे और हम इस अंधेरी गुफा का कोई न कोई निकासमार्ग ढूंढ़ ही लेंगे। चलिए कुछ विचार करते हैं। यदि बच्चों का पहला गुण सरलता है तो उन्हें जटिलता की गुंजलिका में क्यों उलझाय जाए। टी वी और फिल्मों की चकाचौंध से दूर बच्चों को बाल साहित्य की मनोरम दुनियाँ में ले जाने का प्रयास क्यों न करें? अपने रिश्तेदारों या तथाकथित मित्रों की कुटिल कथाओं से उन्हें दूर ही रखें। बच्चों के जिस गुण अहंकारहीनता की चर्चा प्रायः की जाती है, विचार करें कि कहीं हम स्वयं अपने बच्चों को अहंकार के मार्ग पर आगे बढ़ने में सहायता तो नहीं कर रहे ? निश्चित ही यह युग कड़ी स्पर्धा का युग हैं। स्पर्धा में कोई न कोई विजेता भी होगा। प्रतियोगिता कोई भी हो, यदि हमारा बच्चा विजेता होता है तो उसे बताएं कि जय और विजय सिक्के के दो पहलू हैं। जो आज विजेता है वह कल पराजित भी हो सकता है। जो विजय के अहंकार का बोझ लेकर आगे चलता है उसे पराजय की चट्टान से टकरा कर बहुत गहरी चोट लगती है। स्वस्थ स्पर्धा तो

समय की आवश्यकता है, किन्तु स्पर्धा परस्पर शत्रुभाव के निर्माण में सहायक नहीं होनी चाहिए। स्पर्धी के प्रति प्रेम और सहकार का भाव नष्ट नहीं हो यह प्रयास बच्चों के अभिभावकों और शिक्षकों की ओर से निरंतर होना चाहिए। स्वार्थ का विरल भाव भी बचपन का महत्वपूर्ण गुण हैं। बच्चे के स्वार्थ के भाव में वृद्धि न हो यह प्रयत्न हम सभी को करना ही चाहिए। इस दिशा में सामूहिक खेलों यथा – फुटबॉल, बास्केटबॉल, कबड्डी, खो–खो, क्रिकेट जैसे खेलों में बच्चों की सहभागिता को अवश्य प्रोत्साहित करना चाहिए। बच्चों के जिस एक और गुण पर विश्व मोहित होता है वह है उनका निर्मल हास्य । स्वार्थपरता का भाव जैसे क्षीण होता जाएगा, निर्मल हास्य का झरना स्वयं ही फूट पड़ेगा। जब कभी भी वयस्कों में होली के उत्सव की चर्चा होती है तो जैसे प्रत्येक व्यक्ति अपने बचपन की होली की स्मृतियों में खो जाता है। त्योहारों के प्रति हमारे उत्साह में अनवरत रूप से कमी आई है। अपने मन पर पड़ी समय की धूल को झाड़ कर उत्सवों के आयोजन में बच्चों के उत्साह को अपनी मुस्कान का सम्बल प्रदान कर बचपन को यादगार बनाने का अवसर देकर उनके बचपन को समयपूर्व खो जाने से बचा लें। संसार में बढ़ती कुटिलता से अपने बच्चों को बचा ले जाना अभिभावक का कौशल है। बच्चे अपने मनोभावों को स्पष्ट रूप से खुल कर प्रकट करें। इसके लिए उन्हें प्रोत्साहित करें। आपका यही प्रोत्साहन उनके बचपन को जटिल, कुटिल और नष्ट होने से बचाएगा। बच्चों की शरारत और अभद्रता के बीच के अंतर को समझना हम सबके लिए नितांत आवश्यक हैं। बच्चों को उनकी बदतमीजी के लिए किसी भी प्रकार से रोका जाना चाहिए किन्तु बच्चों की शरारत तो सभी के लिए आनंद का विषय होना चाहिए। शरारतों को शरारत की तरह ही लेना चाहिए और बच्चों की शरारतों को अपने बचपन की शरारतों के संदर्भों से जोड़ कर मन को प्रफुल्लित करना चाहिए। विश्वकवि रवीन्द्र नाथ टैगोर द्वारा स्थापित शांति निकेतन में प्रकृति के सानिध्य में शिक्षा को महत्वपूर्ण माना जाता है। एकबार शांति निकेतन के एक शिक्षक गुरुदेव के पास बच्चों की शिकायत करने पहुंचे कि बच्चे अध्ययन के समय में पेड़ों पर चढ़ कर फल खा रहे हैं, तो गुरुदेव ने कहा कि इतना सुंदर मौसम है। शांति निकेतन के वृक्ष फलों के माध्यम से बच्चों को स्नेहपूर्ण आमंत्रण दे रहे है। बच्चों की खुशियाँ देखो, वे कितने आनंदित हैं। प्रकृति गीत गा रही है, बच्चे प्रकृति के स्वर में स्वर मिल रहे हैं। अगर यह शरारत है तो भी शरारत यदि बच्चे नहीं करेंगे तो क्या अब इस उम्र में हम लोग करेंगे। गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर को दृष्टिकेण सकारात्मक है। ''बचपन है तो शरारत है, शरारत है तो बचपन है।''

यदि हमें आज बच्चों के खोते हुए बचपन की वास्तविक चिंता है तो हमें चाहिए कि उनके बचपन को सराहें, आनंद लें। उनके बचपन को यादगार बनाएं, उनके लिए भी और अपने लिए भी। उनके विभिन्न मनोभावों को रचनात्मक आयाम दें। उनकी शरारतों की फोटोग्राफी या विडियोग्राफी के माध्यम से संरक्षित करें। हम सभी जानते है कि बच्चों के मन अत्यंत संवेदनशील और कोमल होते है। अपनी कुंठाओं के पत्थरों से उन्हें आहत न करें। बच्चों की आँखो में सुंदर सपने हों, आपके लिए आदर और प्रेम का भाव हो, भय और आतंक का अंधेरा नहीं। बच्चों की आँखो में आपके व्यवहार से आँसू न आ पाएं इसका ध्यान रखें। सारी पूजा, परिक्रमा से बड़ी है बच्चों की हंसी, मुस्काराहट, तभी तो निदा फाजली को कहना पड़ा –

''घर से मस्जिद है बहुत दूर चलो यूँ कर लें,

किसी रोते बच्चे को हंसाया जाए।''

नवीन चतुर्वेदी
सेवानिवृत्त, प्राचार्य
रेलवे स्कूल, इटारसी (म.प्र.)



'' हिंदी प्रचार का उद्देश्य केवल यही है
कि जो काम अंग्रेजी से लिया जाता है
वह आगे चलकर हिंदी में लिया जाय ''।
- सुभाषचंद्र बोस

ज्ञान की खान है पुस्तकें





पुस्तकें वे विश्वस्त दर्पण है जो संतों और शूरवीरों के मस्तिष्क का परावर्तन हमारे मस्तिष्क पर करती हैं। पुस्तकें हमारा मार्ग दर्शन करती है, रास्ता दिखाती हैं एवं हमें सलाह देने का कार्य भी करती हैं। पुस्तकों को पढ़कर मन को परमशांति का अनुभव होता है। पुस्तकें हमें संस्कार एवं ज्ञान देकर एक अच्छा इंसान बनाती हैं। पुस्तकें ज्ञान अर्जित करने का सबसे सरल एवं सस्ता साधन हैं। पुस्तकें अमर हैं इनका कभी निधन नहीं होता है। पुस्तकें हर व्यक्ति के व्यक्तित्व को निखारती है एवं दृष्टिकोण में बदलाव लाती है। पुस्तकें हमारे मनोरंजन का साधन है।

पुस्तकें हमें यह सिखाती है कि जीवन को एक ऐसी खुली किताब की तरह कैसे जिये, जिसे केवल तभी पढ़ा जा सकेगा जब अपने भीतर सम्यक ठहरा जा सकेगा। किताबें अनूठी होती है। किताबें हमेशा जीवित रहती है, भले ही दुनिया के किसी दूरस्थ वाचनालय की अंतिम पंक्ति में खड़ी किसी आलमारी में ही सही। किताबें हमें यह सिखाती हैं कि मौत को मुँह कैसे चिढ़ाया जाये, रेगिस्तान को कुल्हाड़ी से कैसे काटा जायें, किताबें हमें सिखाती है कि इतने विचारों से भरे होने के बावजूद चुप कैसे रहा जाये, धीरज कैसे धरा जाये एवं मूक प्रतीक्षा कैसे की जाये, उस एक सहृदय की, जिसके होने को वह किताब नये मायने दे सकती है। वास्तुकार कहते है कि घर वही जिसमें आंगन हो। नए जमाने के इंटीरियर डेकोरेटर कहते है कि बैठक खाना वही, जिसमें किताबें हो। इसी के साथ किताबें नुमाइश और सजावट की चीज बन गईं।

पुस्तकें हमें स्वतंत्र करती है और अगर वो वैसा नहीं कर, रही हैं तो हमें समझ जाना चाहिए कि हम अपने उस विवेक का समुचित अभ्यास नहीं कर रहे हैं, जो किताबों के भीतर दिखता है, उज्जवल मेघा के नवनीत की तरह। किताबें हमें सिखाती है उड़ा कैसे जाये। किताबें हमें यह भी सिखाती है कि धरती में सिर घंसाकर कैसे जिया जाए, साथ ही सबसे बढ़कर किताबें हमें यह सिखाती हैं कि जीवन को कैसे जिया जाए।

मित्रों। किताबें आत्मविभोर होती हैं। शायद, वे कभी हमें खुद को पढ़ना भी सिखा सकें। किताबें भौतिक उपस्थिति के बावजूद विचारों की एक ऐसी निधि को अपने भीतर संजोये होती हैं जो कि अभौतिक है, निर्गुण है, जिसे तराजू पर तौला और फीतों से मापा नहीं जा सकता है। साथ ही इसके बावजूद दुनिया की कोई मीनार इतनी बुलंद नहीं हो सकती। कोई सागर इतना गहरा नहीं हो सकता, जितना कोई उम्दा ख्याल गहरा हो सकता है। बंधुओं मामूली से कागज पर अंकित चंद शब्द कितने ताकतवर हो सकते है, मनुष्यता का इतिहास इसका साक्षी रहा है।

मित्रों!... किताबों से ज्यादा वफादार कोई मित्र नहीं। किताबें ऐसी शिक्षक हैं जो बिना कष्ट दिये, बिना आलोचना किये और बिना परीक्षा लिये हमें शिक्षा देती है। अच्छी किताबें जादुई कालीन की तरह हमें उस दुनिया की सैर कराती है, जहाँ हम अन्य किसी माध्यम से प्रवेश नहीं कर सकते हैं। किताबें जीवन का हमसफर बन सकती हैं, उन्हें साथ लेकर तो चलो। मित्रों!... किताबें दुखते सिर का नरम सिरहाना हैं, एक ही जिंदगी में हम पुस्तकों के सहारे न जाने कितनी विचित्र जिंदगियों के गली–गलियारों में घूम आते हैं।

पुस्तकें जीवन की सबसे बेहतर मार्गदर्शक है। साहित्य के अध्ययन से व्यक्तित्व का विकास पूर्ण होता है। इसलिये कहा गया है कि ''साहित्य एक उद्देश्य है'' पुस्तकों का अध्ययन हमें आनंद देता है, अलंकृत करता है और योग्यता प्रदान करता है।

बंधुओं!... पुस्तकें हर व्यक्ति की असली मित्र की तरह साथ निभाती है, साथ ही जीवन में सही मार्ग दिखाती हैं, पुस्तकों

की अपनी एक अलग भूमिका होती है, किताबें नहीं होती तो कम्प्यूटर नहीं होता। पुस्तकों के अध्ययन से अहर्निश नई ऊर्जा मिलती है, साथ ही भौतिक एवं बौद्धिक विकास होता हैं चूँकि साहित्य समाज का दर्पण है। अतः साहित्य को जानने के लिये पुस्तकों का पठन–पाठन अत्यंत जरूरी है। पुस्तकें जीवन की सबसे बेहतर मार्गदर्शक हैं। एक पुस्तक जितनी वफादार है और कोई नहीं होता है। एक पुस्तक ज्ञान तो हमें देती है, इससे हमारा अच्छा खास मनोरंजन भी हो जाता है।

पुस्तकों के बिना ज्ञान की दुनिया अधूरी है। साहित्य –दर्शन और पुस्तकों के अध्ययन से ही बुद्धि का विकास होता है। साहित्य के प्रति लोगों का आकर्षण बढ़ाने और ज्ञान के विस्तृत फैलाव के लिये साहित्य महोत्सव एवं पुस्तक मेला जैसे आयोजन बेहद ही महत्वपूर्ण हैं। किताबों से दूर रहे लोगों को अब गूगल और विकीपीड़िया पर जानकारियाँ लेते देखा जा सकता है। इंटरनेट के इन खतरों से बचने और जानकारियों से अवगत कराने का सबसे अच्छा माध्यम ''पुस्तकें'' ही हैं।

पुस्तकें तो प्रेरणा का भंडार होती हैं, इन्हें पढ़कर ही हमें जीवन में महान कार्य करने की प्रेरणा मिलती है। पुस्तक अपने विचारों और भावनाओं को दूसरों तक पहुँचाने का सबसे अच्छा साधन हैं। प्राचीन समय में पुस्तकें आसानी से प्राप्त नहीं होती थी उस समय पुस्तकों की प्रिंटिग करना आसान काम नहीं था। उस वक्त ज्ञान का माध्यम केवल वाणी के द्वारा ही किया जाता था। आज आधुनिक युग में प्रिंटिग का अविष्कार होने के कारण पुस्तकें आसानी से उपलब्ध हो जाती हैं। अब हर विषय पर जानकारियाँ हर भाषा की पुस्तकों में प्रकाशित होने लगी है।

बंधुओं!... कुसंगति में रहने से तो अच्छा है कि आप अकेले रहकर पुस्तकें पढ़े, जिससे आपको गहरे ज्ञान की प्राप्त होगी कुसंगति में रहकर तो आपको बुरे विचार ही हासिल होंगे। पुस्तकें पढ़कर आपके मन का अंधकार खत्म होता है और आप के मन में प्रकाश का उजाला पैदा होता हैं और साथ ही बदले में हमसे यह कुछ लेती भी तो नहीं ।

पुस्तकें चरित्र निर्माण का अच्छा साधन होती है। अच्छे विचारों, प्रेरणादायक कहानियों से भरपूर किताबों से देश की युवा पीढ़ी को एक नई दिशा दी जा सकती है। इनसे ही देश में एकता का पाठ पढ़ाया जा सकता है। इसलिये पुस्तकें बहती हुई ज्ञान की गंगा के समान है जो अविरल बहती रहती है। थमने का नाम नहीं लेती। अतः हमें हमेशा ही ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायक पुस्तकों का ही अध्ययन करना चाहिये।

किसी कवि ने कहा है कि :–

ज्ञानियों का ज्ञान है किताबें, ज्ञान का भंडार है किताबें।
देश की उन्नति है किताबें, घर–घर में बसती है किताबें।
आलमारी के कोनों में रहती है किताबें,
ना कुछ लेती है किताबें, ना कुछ देती है किताबें।
महज ज्ञान का पाठ पढ़ाती हैं किताबें,
मानवता का बखान करती हैं किताबें।
मानवता का विकास करती हैं किताबें।
किताबों के महत्व को जो समझ पाया है,
वहीं देश–दुनिया में उन्नति कर पाया है।



अंत में मैं सभी साहित्य प्रेमियों से गुजारिश करना चाहूँगा कि –
पुस्तक के तुम दोस्त बनो, देगी तुमको पुस्तक ज्ञान।
हिंदी, इंग्लिश और गणित का, सिखला देगी तुमको विज्ञान।
मात–पिता को समझो पूज्य, करना तुम सबका सम्मान।
धर्म, आध्यात्म, संस्कृति का, पुस्तक देगी आपको ज्ञान।
सिखलाती है प्रेम की भाषा, मानवता का देती ज्ञान।
बिन पुस्तक के ज्ञान अधूरा, पढ़कर बनो महान ।

डॉ. श्रीराम गुप्त
(सेवा.नि.) सी.टी.आई., कटनी जं.

गला दर्द:
कहीं टॉंसिल तो नहीं ?





प्रिय पाठकों! एक दिन सुबह–सुबह मेरे रेल परिवार के मेरे एक मित्र से प्रातः कालीन भ्रमण के दौरान भेंट हो गई, वे कुछ परेशान से दिख रहे थे, मैंने उनसे पूछा क्या बात है भाई! आप कुछ चिंतित से दिख रहे हैं ? उन्होंने जवाब दिया क्या बतायें डाक्टर साहब! विगत दो दिनों से छोटे बालक के गले में लगातार दर्द है, जिस कारण वो स्कूल भी नहीं जा पा रहा है। मैंने कहा मित्र मेरे रहते आप पेरशान न हो आप बच्चे को रेलवे के होम्योपैथिक औषधालय में लेकर आये मैं बच्चें का शारिरिक परीक्षण कर औषधियाँ प्रदान कर दूंगा। चूंकि उस दिन शनिवार का दिन था। और शनिवार कार्यालय अवकाश होने के कारण वे बच्चे को लेकर मेरे पास आयें, जैसे ही मैंने बच्चें का मुंह खुलाकर गले का परीक्षण किया तो पाया कि बच्चे को टांसिल्स की शिकायत थी।

प्रिय पाठकों। उक्त कथन का विवरण देने से मेरा तात्पर्य यह है कि आजकल बच्चों की रोगरोधक क्षमता कम होने के कारण टांसिल जैसे संक्रमण बढ़ रहे हैं। तो अब बात आती है कि यह टांसिल होता क्यों है? इसके लक्षण क्या है? निदान एवं उपचार क्या है? तो मैं आप सुधी पाठकों की जिज्ञासा का समाधान करना चाहता हूँ।

टांसिल दो प्रकार के होते हैं –

1. एक्यूट टॉंसिल।
2. क्रांनिक टॉंसिल।

1. **एक्यूट टॉंसिल** :– अर्थात वे टॉंसिल जो कभी अचानक प्रगट हो जाते हैं एवं 4–5 दिनों तक रहते है एवं अत्यन्त कष्टदायी होते हैं।

कारण – इसके होने के दो प्रधान कारण होते हैं।

1. वायरल इंफेक्शन।
2. बैक्टेरियल इंफेक्शन।

लक्षण – (1) गले में दर्द का होना टॉंसिल का सर्वप्रथम सामान्य लक्षण है।
2. भोजन निगलने में कष्ट होना।
3. ज्वर का होना, कभी–कभी यह ज्वर बढ़ कर 102 अथवा 103 डिग्री तक हो जाता है।
4. सिर दर्द।
5. पूरे शरीर के दर्द।
6. गले में सूजन एवं दर्द।

7. स्वर का परिवर्तित हो जाना।
8. टाँसिल बढ़े दिखते हैं।
9. बच्चे के गले के गांठ दिखाई पड़ती है।
10. बच्चे को कभी–कभी वमन (उल्टी) तक हो जाता है।

जांचे – 1. रक्त की जांच 2. खरार की जांच

2. क्रांनिक अर्थात पुराना टांसिलः–

जब बच्चे को बार–बार अथवा लगातार टांसिल बने रहते हैं तो उसे क्रांनिक टाँसिल कहते है। जिनमें बच्चे का शारीरिक एवं मानसिक विकास उम्र के अनुपात से कम होता है।

लक्षण :– (1) बच्चें को सांस लेने में कष्ट होता है।
(2) बच्चे को निगलने में कष्ट होता है।
(3) गले में सूखापन लगता है।
(4) गले में छींक का लगातार अनुभव।
(5) भोजन करते समय गले में रूकावट होती है।
(6) बार–बार टांसिल होने के कारण धीमा–धीमा चुभन बच्चे को हमेशा बना रहता है जो कि शरीर के पांचन तंत्र को कमजोर कर देता है।
(7) उम्र के अनुपात से वजन कम रहता है।
(8) टांसिल के कारण बच्चे का मानसिक विकास कमजोर हो जाता है।
(9) स्मरण शक्ति कमजोर हो जाती है।
(10) सिर के बाल झड़ते है।
(11) त्वचा में रूखापन आ जाता है।

रोग की जटिलतायें–

यदि समय रहते इस रोक का उचित उचार नहीं किया गया तो यह गंभीर रूप ले सकता है एवं रोग की जटिलतायें अर्थात रोग से जुड़ी अन्य समस्यायें भी हो सकती है जो निम्न है।

(1) ''क्निन्सी'' रोग अर्थात टाँसिल में पस बन जाता है।
(2) सायतुसांयरिस रोग हो जाना।
(3) कान में दर्द एवं सुनने में परेशानी होना।
(4) जोड़ों में दर्द एवं ज्वर होना ।
(5) गुर्दे में सूजन।
(6) रोगी को नींद ज्यादा आती है। शारीरिक एवं मानसिक थकान का लगातार अनुभव होता है।
(7) बच्चा सोते समय खर्राटे लेता है।
(8) बिस्तर में मूत्र करता है।
(9) शारीरिक विकार एवं तंत्रिकाओं में कमजोरी आ जाती है।
(10) बच्चे के स्वभाव में चिड़चिड़ापन आ जाता है।

पथ्य :–इस रोग में उपचार के साथ–साथ पथ्य भी आवश्यक है जो निम्न हैं :–



(1) रोगी बच्चे को शारीरिक आराम दें।

(2) घर का बना स्वच्छ एवं ताजा भोजन दें।

(3) कुनकुने पानी में सादा नमक डालकर गरारे करवायें।

(4) विटामिन 'सी'' दें।

(5) खटाई न दे।

(6) ठंडा पेय अथवा ठंडा आहार का सेवन कदापि न करायें।

(7) मैगी, न्यूड्ल, पिज्जा, बर्गर जैसे अथवा बाहर के सील पैक खाद्य सामग्रियाँ रोगी बच्चें को कदापि न दें।

उपचार :–

प्रिय पाठको! हमारे प्यारे–प्यारे नन्हे–मुन्नों को टॉंसिल रोग हो जाये या बार –बार हो तो इसका उपचार समय, रहते ही करवा लेना चाहिये। एक रोग के तरूण एवं जीर्ण रूप दोनों का ही होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति में कारगार उपचार है। तरूण (एक्यूट) रूप में वेलाजोना हिपर सल्फ मर्क सॉल, वेरायटा कार्व, फायटोलैक्का इत्यादि एवं जीर्ण (क्रांतिक) रूप में सोरितम ट्यूवरकूलिनम, केल्केरिया कार्व आदि होम्योपैथिक औषधियाँ उपयोगी होती हैं। किन्तु पाठकों इन होम्योपैथिक औषधियों का प्रयोग बिना किसी होम्यो चिकित्सक के परामर्श के कदापि न करें।

प्रिय पाठको! आशा है टॉंसिल जैसी कष्ट दायी रोग की यह जानकारी आप सभी पाठकों को पसंद आयी होगी। रेल परिवार की इस बगिया के नन्हें–मुन्ने फूलों का खुश रहना जरूरी है क्योंकि यदि वे खुश, प्रसन्न एवं स्वस्थ्य हैं तो उनके अभिभावक भी बिना किसी तनाव के अपने परिवार की रेल को निरंतर मुस्कान के साथ चला पायेगें।

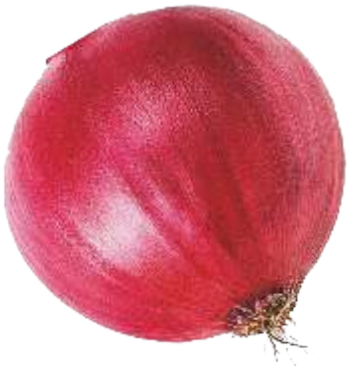
डॉ. अलकेश खत्री
(होम्योपैथिक चिकित्सक)
केन्द्रीय चिकित्सालय
प.म. रेलवे जबलपुर

'' अन्य भाषाओं के शब्दों को आत्मसात करने की जो विलक्षण क्षमता हिंदी में है, किसी और भाषा में नहीं।''

- अज्ञात

हम कसम प्याज की खाते हैं ....





मैं रविवार को रसोई घर में गर्म पत्नी ओह! सॉरी धर्म पत्नी यह मुंह से ससुरी ना चाहते हुए भी आखिर सच्चाई निकल ही जाती है यानी बात – बात में गरम होने का धरम निभाने वाली अर्धांगिनी को गरम – धरम पत्नी कहा तो जा सकता है और कहना भी चाहिए परंतु सच्चाई हमेशा फायदे का सौदा तो होती नहीं और फिर पहले से ही बड़े हुए तापमान को और क्यों बढ़ाकर उसकी गर्मी में नाहक झुलसा जाए। सो अपना पति धर्म निभाते हुए अपनी पत्नी को धर्म पत्नी कहने में ही भलाई है। तो मैं क्या कह रहा था वो अपनी धर्मपत्नी के साथ किचिन में जीरा ढूंढ़ रहा था। आप सोच रहे होंगे, यह जीरे का सुबह–सुबह क्या काम सो भैया! आज हम पोहा का नाश्ता बनाने के लिए जीरा ढूंढ़ रहे थे। पता नहीं कौन–सी डिबिया में छुपा बैठा था। खोजता था जीरा, मिल रही थी सौंफ । और जीरे के बिना छोंक लग नहीं सकता था। क्योंकि हमारे घर की रसोई की कभी आन बान शान रही प्याज पूरी तरह से गायब थी। पहले यह सवा सेर हुई फिर सेर और फिर पाव होकर धीरे से कब गधे के सिर से सींग की तरह गायब हो गयी। कुछ पता ही नहीं चला, आखिर हम कब तक साधते, कब तक इसके बड़े हुए भाव और नखरों को उठाते, हम जैसे ही इसके पास खिसकते यह और आगे बढ़ जाती और बढ़ते–बढ़ते इसके भाव आसमानी और हमारी औकात जमीनी सो असंभव लक्ष्य समझ कर प्याज का पीछा करना ही छोड़ दिया परंतु यह निर्णय इतना आसान नहीं था। कभी–कभी मजबूरी में अनचाहे कठोर निर्णय लेने ही पड़ते हैं। प्याज भले ही हमारी रसोई से दूर हो गयी हो परंतु दिल से कभी दूर नहीं हुई वह लगातार हमारे ख्वाबों की मलिका बनी रही। जैसे ही मेरे कानों में आवाज पड़ी 'हम कसम प्याज की खाते हैं सब्जी नहीं बनाएंगे। 'सुनकर मेरा चौंकना स्वाभाविक था। जो लोग कल तक प्याज खाते थे। आज बेचारे प्याज की कसम खाने को मजबूर हैं। मैंने अपना जीरा खोज अभियान बंद किया और गगन भेदी नारे लगा रही भीड़ को देखने घर से बाहर निकला। भीड़ में देखा मोहल्ले के सभी परिचित शर्मा, वर्मा, कर्मा हाथों में प्याज के फोटो वाली तख्तियां लिए समवेत आक्रोशित स्वर में नारे लगाते हुए आगे बढ़ रहे थे।

मैंने जुलूस के आगे–आगे चल रहे दुलारे भाई से पूछा– आज सुबह सबेरे कहाँ..?

'अरे! तुम्हें नहीं मालूम तुम आदमी हो या गधे।' दुलारे ने जैसे हिकारत भरी दृष्टि से देखते हुए मुझसे प्रतिप्रश्न किया।

'मैंने कहा नहीं भाई ! बताओं तो सही भला हुआ क्या हैं।'

'अरे! देख नहीं रहे लोगों की आँखों में आँसू, उनका गुस्सा .....।

'सो तो है फिर भी ।'

'फिर भी क्या यह कोई घड़ियाली आँसू नहीं और ना ही प्याज काटने से निकले आँसू हैं। बल्कि कई दिनों से घर में प्याज नहीं कटी सो प्याज से बिछुड़ने के आंसू है।'' दुलारे क्रोध में फुफकारते हुए, डबडबाती आंखों से बोला।

और फिर भीड़ की अगुआई कर हरे छुटभैया प्रसाद ने नारा बुलंद किया 'आवाज दो' भीड़ ने जवाब दिया 'हम एक हैं' और फिर वही गगनभेदी नारा गूंजा 'हम कसम प्याज की खाते हैं, सब्जी नहीं बनाएंगे।'

मैं रसोई में जीरा पोहा सब कुछ भूल गया। पैरों में हवाई चप्पल पहने ही शर्ट और लुग्गी में हवा हवाई लुंग्गी डांस करता हुआ जुलूस के संग हो लिया। भीड़ गुस्से में थीं चर्चा से पता चला, भीड़ कह रही थी। बहुत हुई मंहगाई की मार, नहीं चाहिए यह निकम्मी सरकार। अब हमें आर –पार की लड़ाई लड़नी होगी। गरीबों की थाली से शासन ने प्याज छीन कर अच्छा नहीं किया। हम इनसे प्याज ही तो मांग रहे हैं। कोई काजू–बादाम तो नहीं मांग रहे। भीड़ से ही पता चला कि आज क्षेत्रीय विधायक जी के घर भीड़ जाकर ज्ञापन देगी, उनका घेराव करेगी और उनसे मांग करेगी कि यदि सप्ताह भर में प्याज के भाव अर्श से फर्श पर नहीं आये तो हमें कोई बड़ा कदम उठाना पड़ेगा जिसके जिम्मेवार आप होंगे और उन्हें स्मरण दिलाएंगे कि प्याज के बढ़ते भावों से यहां सरकारें बदल गयी फिर आप किस खेत की मूली हो।

आज के जुलूस की विशेषता थी इसमें हर आयु वर्ग के यानी बाल, युवा, वृद्ध बिना लिंग – भेद के स्त्री –पुरूष सभी धर्मो और पार्टियों के लोग सम्मिलित थे यानी यह तो सिद्ध हो चुका था कि प्याज पीड़ित मोर्चा संगठित था और संगठन में शक्ति होती हैं।

जुलूस का सारा वातावरण प्याजमय था। भीड़ में शामिल हर व्यक्ति सिर्फ और सिर्फ प्याज केन्द्रित चर्चा में मशगुल था। भीड़ में शामिल एक बंदा सुना रहा था । भाई! कल गजब हो गया पड़ोसी बैंक से एक लाख रूपये लेकर निकल रहा था, रास्ते में लुटेरों ने सड़क पर प्याज बिखरा दी। मेरा पड़ोसी रूपयों से भरा बेग बगल में रखकर प्याज बटोरने लगा, इतने में लुटेरे उनका बेग उठाकर भाग गये। कभी प्याज मिलने की खुशी और नोट लूट जाने के गम में वह कभी खुशी कभी गम गाना गाते हुए घर लौटे।

तभी भीड़ में शामिल एक बंदा बोला –'अब क्या बताएं, कल हमारी पड़ोसन मिसेज शर्मा सब्जी मंडी से प्याज लेकर लौट रही थी। गले में भारी–सी सोने की चेन और मंगलसूत्र पहन रखा था, पर लुटेरों ने चेन और मंगलसूत्र को छोड़ उनके हाथ से प्याज का थैला छीना और गायब हो गए। वे चिल्लाती रह गईं। हाय! रे मेरी प्याज ।

मुझे तो आश्चर्य तब हुआ जब एक बंदे ने अपना अनुभव बताया कि घर – घर से कचरा उठाने वाले निगम कर्मियों को ऊपर से निर्देश है कि आय से अधिक सम्पत्ति के मामलों को पकड़ने के लिए उन्हें निर्देश दिए गए हैं कि जिन घरों के कचरे से प्याज के छिलके निकले, उनके पूरे पते गोपनीय तरीके से ऊपर अधिकारियों तक भिजवाएं। जिससे जांच की जा सके कि इतनी महंगी होने के बाद भी यह प्याज कैसे खा रहे हैं। जांच के बाद इन प्याज खाऊ लोगों के घर पर रेड डाली जा सके। भीड़ नारे लगाती हुई विधायक जी के निवास की ओर बढ़ रही थी और एक से बढ़कर एक रोचक किस्से सुनने को मिल रहे थे।

तभी एक भाई साहब बोले ' आप मेरी बात को मजाक में मत लेना। प्याज को लोगों ने अब स्टेटस सिंबल बना लिया है।'

'वो कैसे मैंने सहज जिज्ञासा भरा प्रश्न किया।

'भैया!.... कल मेरे घर एक शादी का निमंत्रण आया उसमें विशेष नोट डला देख मैं चौंक गया, जिसमें लिखा था। स्वरूचि भोज के लिए सभी सब्जियों में प्याज का इस्तेमाल किया गया है। और सलाद में भी प्याज उपलब्ध है। कृपया पधारियेगा जरूर। मैं आश्चर्य से मुंह फाड़कर उनकी बात पूरी तरह सुनकर मुंह बंद भी नहीं कर पाया था कि एक बंदा जो बहुत देर से कुछ बोलना चाहता था। परंतु बोल नहीं पा रहा था, अवसर मिलते ही बोला – 'यह सब बातें तो छोड़िए जनाब अब प्याज की आड़ में कैसे लोग आंखों में धूल झोंक कर झूँठी शान दिखाकर अपनी कॉलर टाइट कर रहे हैं। आप सोच भी नहीं सकते। अब कुछ लोग घर में पड़ी पुरानी सड़ी प्याज के कुछ बूंदे निचोड़ कर शीशी में भर लिए हैं, और घर से निकलते वक्त दो बूंद जिंदगी की यानी प्याज के अर्क की मुंह में डालकर निकलते हैं और दोस्तों से उछल–उछलकर बातें करते हैं। मुंह से मुंह लड़ा कर उनपे प्याज की सुगंध (जो कभी दुर्गंध मानी जाती थी) फेंकते हैं। यह रौब जमाने के लिए की वे आज भी प्याज खा रहे हैं। यानी अब लोग दूसरों को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए प्याज का स्प्रे बॉडी पर लगाकर निकल रहे है, यानी ''ओनियन – परफ्यूम' लगाओ किसी को भी रिझाओ।''

यानी अब ओनियन रूम फ्रेशनर के साथ ही ''आपके टूथ –पेस्ट में प्याज है, '' अब नहाने का नया साबुन आज की सुगंध में भी उपलब्ध, काले लंबे घने बालों के लिए प्याज युक्त शैम्पू और सिर में लगाने का तेल।

यानी वर और वधु प्याज की मालाएं एक–दूसरे को पहनाएंगे, बारातियों का स्वागत प्याज से किया जाएगा। आप हंस रहे हैं भाईया यह सच है किसान प्याज के खेतों में पहरा दे रहें हैं। वो भी सशस्त्र क्योंकि चोर लुटेरे प्याज पकने से पहले ही खोदकर चुराए ले जा रहे हैं।, प्याज खुद गई तो उसका बीमा कराया जा रहा है उसे लॉकर में रखा जा रहा है, मुई प्याज नहीं हुई अमृत–फल हो गयी। लोग उतारू हैं प्याज खाने को प्याज ओढ़ने–बिछाने को। चंद मुठ्ठीभर लोग ऐसे भी हैं जिनके पूर्वज बड़े दूरदर्शी थे जिन्हें पूर्वाभास था कि आगे चलकर प्याज को लेकर यह दुर्दशा होगी। तो उन्होंने कहा प्याज तामसिक भोजन है यह त्याज्य है और ऐसा मानने वाले आज अपने और पूर्वजों के फैसले पर खुश हैं। प्याजी आंदोलन की भीड़ नेता जी के घर पहुंच चुकी है मीडिया के लोग भी वहां पहले से हैं। ज्ञापन देने गए कुछ छुट भैया नेता अपना विज्ञापन करने में जुटे हैं। हंस–हंस कर दो अंगुलियों से विक्ट्री साइन बना कर फोटो खिंचवाने लगे। कुछ अपने –अपने मोबाइलों से सेल्फ़ियाना मूड में खुद खींचो नियमानुसार विधायक जी के साथ सेल्फी लेकर धन्य हो रहे हैं। कुछ तुरंत फेसबुक और व्हाट्स एप पर ताजा अपडेट्स डाल स्वयं को गौरवान्वित कर रहे हैं। नेता जी भी प्याज के छिलकों की तरह आश्वासन पे आश्वासन दिए जा रहे हैं। उनकी नकली बत्तीसी से असली मुस्कान को देख वोटर यानी आम आदमी खुश हो रहा है। आश्वासन के पिटारे से निकली वायदे की बिन नेता जी ने फिर बजाई। आंदोलनकारी जनता को सुनाई। भीड़ का नेतृत्व कर रहे छुट भैया नेता जी जिन्हें उम्मीद है। इस बार पार्टी से पार्षद के टिकट की । उन्होंने अचानक गगन भेदी नारा लगाया। हमारा नेता कैसा हो भीड़ ने कहा 'भरोसे लाल जैसा हो। नेता जी जिंदाबाद। अब भीड़ हमेशा की तरह छंट रही थी। लोगों को आंदोलन के अलावा घर के और भी जरूरी काम याद आ रहे थे और हम फिर अपनी गर्म –पत्नी सॉरी धर्म पत्नी की अदालत में हाजिर थे।

घनश्याम मैथिल ''अमृत''
वरिष्ठ तकनीशियन, भोपाल

नया साल 2020



चलो दुश्मनों से मुलाकात करें।
नया साल है नई बात करें।।
मज़हबों के नाम क्यूँ दंगे –फसाद ।
हर शक्स से चलो, सवालात करें।।
ना मरे कोई भूखा–प्यासा।
मिलकर ज़माने के ऐसे, हालात हरें।।
जो करें जुल्म बे गुनाहों पर ।
ढूँढ़कर उनको चलो, हवालात करें।।
मुल्क में अमन की बरसात करें।।

नव वर्ष के नये सफर में आओ कदम बढ़ाएँ।
भेद –भाव भूल के सारे, आओ हाथ मिलाएँ।।
हिंदू –मुस्लिम –सिख–ईसाई छोड़ो सब खींचा –तानी।
भारत माँ के लाल हैं हम सब मिलकर दीप जलाएँ।।
एक है हम एक रहेंगे जब तक सूरज चंदा ।
गाँव –गाँव गली –गली में, मिलकर गीत सुनाएँ।।
थक जाएगा एक बेचारा इस दुनिया – दारी मैं ।
मिल जुल कर थोड़ा–थोड़ा आओ बोझ उठाएँ।।
धरती माँ का आँचल ''आशिक़'' इतना फसलों से भर दें।
बन जाये धरती दुल्हन, आओ इसको खूब सजाएँ।।

डॉ. राजू घावरिया
शायर, रेडियो एवं
टी.व्ही. आर्टिस्ट

मनुष्य और उनका भविष्य



1991 में अक्टूबर की बात है, मैं शाहजहांपुर से लखनऊ आ रहा था। टिकट तो मित्रों ने ए सी 2 का निकलवाया था किन्तु हम विलम्ब से पहुंचे जबकि ट्रेन छूट रही थी। स्लीपर सामने आ गयी, उसी में बैठ गया। सोचा दिन का समय है कुछ घंटों का ही सफर है। चेंज करने के बजाय लगा कि यहीं बैठकर यात्रा कर लेते हैं। ए सी 2 ढूंढना भी पड़ता, दूर भी हो सकता था। मैं जिस बर्थ पर बैठा सामने एक दम्पति बैठे थे जो कि बहुत गरीब लग रहे थे। रक्ताल्पता दोनों में साफ दिख रही थी। पूछा तो दोनों मुम्बई जा रहे थे। एक स्टेशन पर एक सात फिट ऊंचा आदमी, बॉडी लैंग्वेज देखने में राक्षस कहना अतिश्योक्ति न होगी, आया और उस महिला को और खिसकने को बड़े खतरनाक अंदाज में कहा। उस वक्त उसका पति टॉयलेट गया हुआ था। महिला ने बड़ी धीमी मरियल और गरीब सी आवाज में कहा, भैय्या यहां बैठे हैं। उस शख्स ने जिस राक्षसी अंदाज में 'चल उधर खिसक' कहा कि मेरी तो रूह कांप गयी।

कि मेरी रूह कांप गयी अर्थात धरती कांप गयी । इसका मतलब यह हुआ कि जब किसी मासूम निरीह इंसान को कोई अपनी भुजा या पद या पैसे के बल पर सताता है तो पृथ्वी कांप जाती है। अर्थात भूकम्प आ जाता है। ऐसे निरीह के लिए ही शायद जीसस ने 'पुअर इन स्पिरिट ' कहा है। यह मुझे बहुत स्पष्ट दिखा। किन्तु इसे सिद्ध तो नहीं किया जा सकता था। हाँ, मैंने यह जरूर, अनुभव किया। अंतोगत्वा वह महिला खिसक गई। और वह महाशय बैठ गए।

1995 में एक समाचार पढ़ा था कि मॉस्को के निकट सुजदाल नामक शहर में विश्व के वैज्ञानिकों का एक सम्मेलन संपन्न हुआ यह जानने के लिए कि भूकंप व भूस्खलन का कारण क्या है। उस सम्मेलन में 23 वैज्ञानिकों ने अपने अपने शोध पढ़े। भारत में दिल्ली यूनिविर्सिटी के तीन प्रोफेसर डॉ. मदनमोहन बजाज, प्रोफेसर डॉ. सैयद मोहम्मद इब्राहिम व प्रोफेसर डॉ. विजय राज सिंह ने 'बिस थ्योरी' नाम से अपने पेपर पर पढ़े और सिद्ध किया कि जहाँ बड़ी संख्या में पशुओं का बध होता हैं उससे हाई फ्रीक्वेंसी की ई. पी. डब्ल्यू. उत्सर्जित होती है। उससे ही धरती के भीतर टेकटॉनिक प्लेट्स टकराती हैं और भूकम्प आते हैं।

अभी हाल ही नेपाल में बड़े भूकम्प में भी (EPW) का हाथ होना बताया जाता है। 'गढ़ी माई' का त्योहार दुनिया का सबसे बड़ा रिचुअल माना जाता है जो कि पांच साल में एक बार आता है, जिसमें 5,00,000 जानवर काटे जाते हैं। जिसमें बकरे, सुअर, भैंसे व मुर्गे शामिल हैं। इस त्योहार के खिलाफ तमाम आवाजें उठने के बावजूद नवम्बर 2014 में यह त्योहार मनाया गया।

20 वर्षों के शोध से वैज्ञानिक इस नतीजे पर पहुची हैं कि एक कत्लगाह में औसतन 50 जानवर रोज काटे जाते हैं जिससे 1040 मेगावाट की नेगेटिव ऊर्जा हर रोज उत्पन्न होती है और सारे विश्व में छोटे बड़े 50,00,000 कत्लगाह हैं जिनमें 50,00,000 करोड़ मेगावाट की मारक क्षमता वाली शोक तरंगे रोज पैदा होती हैं। यह भी कि इस तरह मांस खाने वालों पर निगेटिव असर 18 दिन तक रहता है और आस–पास वालों पर भी इसका असर होता है।

भूकंप से जो ऊर्जा निकलती है वह 1945 में जापान के हिरोशिमा और नाकासाकी पर डाले गए परमाणु बम से निकली ऊर्जा से 100 गुना अधिक होती है। वैज्ञानिकों का दावा है कि मांसाहार बनेगा समग्र विनाश का कारण विश्व के 700 से अधिक वैज्ञानिकों सहित अनेक डॉक्टरों ने माना है कि इनसे प्रकृति प्रभावित होती है। वह पूरी दुनियां को तरंगायित करती है। वे इस नतीजे पर पहुंचे है कि इन्हीं नकारात्मक ऊर्जा के कारण अति वृष्टि, अनावृष्टि, बाढ़, भूकंप, भूस्खलन, हार्ट अटैक एवं अज्ञात नई –नई बीमारियाँ होती हैं।

भारत में भैंस का मांस एक्सपोर्ट :

2016–17 :13,23,578 टन वर्थ 26167 करोड़

2017–18:13,48,225 टन वर्थ 2: अधिक। वर्थ 25,988 करोड मुख्य खरीदार है वियतनाम, मलेशिया, इजिस्ट

विख्यात फिजिशिष्ट स्वर्गीय स्टीफन हॉकिंग ने तो बोला कि मनुष्य का जीवन पृथ्वी पर केवल 100 वर्ष हैं इसलिये जिसको जीना हो अभी से दूसरे ग्रहों पर जाने के उपाय करने लग जाए। उसने यह भी कहा कि जनसंख्या वृद्धि और बढ़ते बिजली उपभोग से अगले 600 वर्षों से भी कम अवधि में धरती आग का एक गोला बन जाएगी और मानव जाति ही नष्ट हो जाएगी। उसने एक वैश्विक सरकार की तत्काल आवश्यकता बताई और परमाणु बमों को निष्क्रिय किया जाने को कहा।

नासा ने भी 14 दिसम्बर 2016 को न्यूज नेशन चैनल के माध्यम से कहा था कि हम वैश्विक आत्मघात की ओर तेजी से बढ़ रहे हैं। उन्होंने कारण बताए:

1. 1950–2016 यानी 66 वर्षों में 1.07 डिग्री सेल्सियस तापमान।
2. ग्लेशियर पिघलकर 12: सिमट जाना।
3. जंगलों में लगने वाली आग से तापमान बढ़ना।
4. ग्लेशियर तेजी से पिघलना
5. होटल आदि बनाना टूरिज्म को बढ़ावा देने के नाम पर प्रकृति से छेड़छाड़ आदि के कारण मौसम में बदलाव होना ।
6. बर्फ बनने में कमी (10 वर्षों 38 सेंटीमीटर कम)

अभी किसी रिपोर्ट में पढ़ा है कि अगले 10 वर्षो में 4 डिग्री तापमान बढ़ने की संभावना है। 184 देशों के 15000 वैज्ञानिकों ने ऑरेगोन स्टेट यूनिवर्सिटी से दूसरी चेतावनी शीर्षक पेपर पर हस्ताक्षर किए । उन्होंने कहा कि 1992 से ग्लोबल ट्रेंड्स में भारी बदलाव होना शुरू हुआ है। चेतावनी का नाम दिया है 'वर्ल्ड सांईटिस्ट्स वार्निंग टू हयूमैनिटी। आर्टिकल अंतराष्ट्रीय टीम द्वारा लिखा गया जिसके अग्रणी रहे फॉरेस्ट्री के विख्यात वरिष्ठ प्रोफेसर विलियम रिपल।

1. ताजे पानी की उपलब्धता में 26: की कमी।
2. समुद्र के डेड जोन में 75: को वृद्धि।
3. 300 मिलियन एकड़ जंगल का कृषि के लिए बदलना ।
4. तापमान का बढ़ना कार्बन का अधिक उत्सर्जन।
5. आबादी में 35: वृद्धि।

सद्गुरु जग्गी वासुदेव कहते है कि 2030 तक भारत में हर किसी को जितना पानी चाहिए उसका 50: ही रह जाएगी। नदियों में 4: पानी सूख चुका है। अगले 20 सालों में 60: पानी सूख जाएगा। लगभग दो माह पूर्व की एक रिपोर्ट के अनुसार दक्षिण अफ्रीका के केप टाउन में अप्रैल से पानी खत्म हो जाएगा। महाराष्ट्र के कई इलाके अभी ही सूखे की मार झेल रहे हैं। इस समास्या से निपटने के लिए पूणे में अनूठा प्रयोग शुरू किया गया है। वहां करीब 400 से अधिक होटलों और रेस्तरां के मालिकों ने ग्राहकों को आधा गिलास पानी देना शुरू किया है ताकि पानी की बचत की जा सके। खुद शहर के मेयर ने भी

अपने ऑफिस में आने वाले को आधा गिलास पानी देना शुरू कर दिया है। कैलिफोर्निया के जंगलों में अक्सर आग लगती है और फिर महीनों लगते हैं बुझाने में। अगस्त 2018 में वहां 16 जगहों पर आग लगी थी। आग से तीन लाख एकड़ जमीन खाक हो चुकी थी। यानी 750 वर्ग किलोमीटर इलाका जो कि लॉस एंजिल्स शहर से अधिक होती है।

दुनियाँ में पृथ्वी व मनुष्य और जीवन मात्र को बचाने हेतु मेरी जानकारी में जो प्रयास किये जा रहे है वे बहुत कम हैं जो कि निम्न है।

1. दुनिया में इस संकट की चेतावनी व बचने के उपाय इस युग के महा मनीषी ओशो ने अपने प्रवचनों मे दी है।
2. बेल्जियम में 65 हजार लोगों ने क्लाईमेट चेंज मार्च निकाला। मकसद था पोलैंड में चल रही 200 देशों की 'समिट' में धरती को बचाने के लिए दबाव बनाना।
3. जर्मनी में कोयले पर प्रतिबंध लगाने की मांग को लेकर बड़ा प्रदर्शन हुआ ।
4. वर्ल्ड बैंक का जलवायु बचाने के लिए बड़ा फैसला : वह जलवायु परिवर्तन से लड़ने के लिए साल में 14 लाख करोड़ रूपए देगा।
5. लंदन में आइसबर्ग के 24 टुकड़े रखे, ताकि ग्लोबल वार्मिंग का असर अपनी आँखो से देख सके, आंतरिक की बर्फ सर्दियों में भी पिघल रही है।
6. संयुक्त राष्ट्र की इंटरगवर्नमेंटल पैनल ऑन क्लाइमेंट चेंज **(IPCC)** ने धरती को गर्मी से बचाने के लिए उसकी तापमान वृद्धि को 2 डिग्री के बजाय 1.5 डिग्री सेल्सियस तक सीमित रखने की अंतिम चेतावनी दे दी है अन्यथा गंभीर परिणाम भोगने होंगे।
7. आरती खोसला, डॉयरेक्टर, क्लाइमेट ने चेतावनी दी है कि तापमान 1.5 डिग्री सेल्सियस पर रोका तो ही दुनिया बचेगी।
8. जलवायु परिवर्तन की बड़ी लड़ाई हार रही है। दुनिया विभिन्न देशों द्वारा पेरिस जलवायु सम्मेलन में औद्योगिक युग की शुरुआत की तुलना में 2 डिग्री से काफी नीचे ले आने की शपथ लेने के तीन साल बाद ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन फिर बढ़ रहा है।
9. इन पक्तियों के लेखक ने 'वन ग्लोबल गवर्नमेंट' का अभियान चलाया है। जिसके अंतर्गत कल्याण, मुम्बई व रायपुर, बिलासपुर, राजगीर, अमृतसर में भाषण दिए व रैली निकाली।
10. धरती को बचाने प्रदर्शनकारियों ने लंदन में नवम्बर 2018 में पांच ब्रिज बंद मिले।
11. अर्ल सी एलिस ह्यूमन इकोलॉजी की विशेषज्ञ का कहना है कि गर्म होती पृथ्वी को विज्ञान के भरोसे नहीं बचाया जा सकता। लोग व उनके संस्थान ही भविष्य का फैसला करेंगे।

मुझे खेद है कि भारत में इस दिशा में कुछ खास होता नहीं दिखाई दे रहा है। सत्ताधारियों को इसके लिए फुरसत ही नहीं है। जबकि इसे प्राथमिकता में चोटी पर रखना चाहिए। धर्मिकों में बड़े –बड़े शंकराचार्य व महा मंडलेश्वर अपने विराट सम्मेलनों में यह तय करने में समय व ऊर्जा नष्ट कर रहे हैं कि महा भारत का पात्र कर्ण विरोधाभासी था कि राम अमुक जगह 2 दिन ठहरे थे कोई कहता है कि नहीं 7 दिन ठहरे थे।

मैं, शिव प्रताप सिंह उर्फ स्वामी अगेह भारती, 'बिस थ्योरी' वाले वैज्ञानिकों से पूछना चाहता हूँ कि वे जब ये कहते हैं कि एक उंगली लहराये तो सारे ब्रम्हांड में हलचल मच जाती है और 50 जानवरों के काटने से 1040 मेगावाट की नेगेटिव ऊर्जा हर रोज उत्सर्जित होती है तो जरा यह भी पता लगाएँ कि नन्हीं बच्चियों से लेकर वृद्ध महिलाओं तक जो नित्य बलात्कार होते हैं

और देश में हर रोज कितनी हत्या और आत्महत्या होती है उससे कितनी निगेटिव ऊर्जा निकलती है। भारत में 30 साल में 50 करोड़ भ्रूण हत्याएं हुई व पाक में सालाना 1000 हॉनर किलिंग हो रहे हैं । सच यह है कि हम महा प्रलय की ओर तेजी से बढ़ रहे है। सबसे बड़ा दुर्भाग्य यह है कि इस वक्त हर एक कुछ कह रहा है। परंतु कोई भी किसी की नहीं सुन रहा है। कृष्ण ने कहा था कि जब–जब धर्म की हानि होगी, मैं आऊंगा। तो क्या वे झूठ बोले? नहीं, कृष्ण कोई व्यक्ति नहीं हैं। वे चैतन्य हैं और चैतन्यता तो एक ही है। वे आते हैं किन्तु हम तो वही पुरानी लकीर पीटते रहते है। कृष्ण को हम पहचानते नहीं। चैतन्य तो एक ही है। उनकी देह दूसरी होगी। स्थितियाँ–परिस्थितियाँ सब बदल गई। उसके अनुसार वो बोलेंगे। मैं मानता नहीं, जानता हूँ कि ओशो कृष्ण की हैसियत के बुद्धपुरूष हैं। वैज्ञानिक जो आज कह रहे है वे सब चेतावनियाँ और इलाज भी सब 58 वर्ष पूर्व बता गए लेकिन कौन उस तरफ ध्यान देता है। ओशो ने स्पष्ट चेतावनी दी ''मैं दुनिया को बता देना चाहता हूँ कि या तो सब एक हो जाओ, नहीं तो सब विदा होने को तैयार रहो।'' ओशो ने यह भी कहा है कि ''पृथ्वी के अस्तित्व में आने के 40,00,000 वर्षो बाद मनृष्य का जन्म हुआ। है। तो यदि मनुष्य का विनाश होता है तो यह मनुष्य के लिए ही नहीं, पूरे अस्तित्व के लिए बड़ी क्षति की बात है।'' अब वैज्ञानिकों को तो सुनना चाहिए। उनकी भी कहां सुन रहे हैं। सड़ी–सड़ी दो कौड़ी की बातों में लड़ रहे हैं। कि मंदिर बने या मस्जिद बने। और कहीं कोई ऐसा परमात्मा नहीं बैठा है जो आकर बचा लेगा। उसने हमें सब कुछ दे दिया। बुद्धि, विवेक, आत्मा सब कुछ अब हम चाहे इसी पृथ्वी को स्वर्ग बना लें, चाहे नर्क बना ले। चाहे घृणा में जियें, चाहे प्रेम में जियें। पृथ्वी को बचाएं, चाहे नष्ट होने दे। तुरंत एक वैश्विक सरकार होनी चाहिये जिससे परमाणु बमों को निष्क्रिय कर दिया जाए और डिफेंस का बजट कम से कम कर दिया जाए। उस बचे धन से जगत को युद्ध स्तर पर हरियाली से भरा जाये। और सारे जगत में ध्यान अंदोलन होना चाहिए ताकि निगेटिव ऊर्जा को न्यूट्रलाइज कर दिया जाए। इसके सिवा कोई कारगर उपाय नहीं। है।

आबादी पर सख्त नियंत्रण हो। मध्य प्रदेश से 12987 न्यूज पेपर निकलते है। सतना जैसी छोटी जगत से 72 न्यूज पेपर निकलते है। देश में 1.05 लाख पेपर निकलते है। इतने पेपर्स की क्या जरुरत है? कितने पेड़ कटते होंगे, पेपर्स निकालने के लिए इस दिशा में हमारे रेल मंत्री श्री पीयूष गोयल ने आन लाइन भर्ती अभियान से बचाए 7.5 करोड़ पन्ने जिससे लगभग 10 लाख पेड़ों के बराबर बचत हुई। 90,000 पदों के लिए 2.37 करोड़ लोग परीक्षा में बैठे। यह भर्ती के साथ ही पर्यावरण की रक्षा के लिए अनूठी पहल थी। वे बधाई के पात्र हैं। रेलवे ने सोलर एनर्जी से एक अप– डाउन ट्रेन चलायी है। धीरे–धीरे सभी ट्रेनें सोलर एनर्जी से चलाने की उम्मीद है। ऐसे में वायु प्रदूषण में कितनी बचत होगी। **WHO** के अनुसार 2017 में वायु प्रदूषण से 70, 00,000 लोगों की मौत हुई । रेलवे का कार्य इस दिशा में सराहनीय है। मुझे बहुत खुशी होती है कि मैं भी इस बड़े परिवार का हिस्सा रहा हूँ। प्रणाम सबको।

शिव प्रताप सिंह,
सेवा निवृत्त लोको फोरमैन,
न.क.जं.जबलपुर



**हिंदी चिरकाल से ही ऐसी
भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी
होने के कारण किसी शब्द का
कभी बहिष्कार नहीं किया।**

- डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

मिस वेजीटेबल 2019





अभी ऑफिस की छुट्टी होने में 15 मिनिट शेष थे और दिमाग ने काम करना बंद कर दिया। मैंने एक लम्बी अंगड़ाई लेकर गहरी सांस खींची। चलो! अब तो समय हो गया है। बाकी काम कल देखेंगे और घर जाने की खुशी चेहरे पर चमक ले आई।

इतने में ही श्रीमती जी का फोन आया और आदेश हुआ सुनो जी!.... ऑफिस से आते समय एक–दो किलो प्याज लेते आइये। सुनते ही सम्पूर्ण वातावरण में निराशा के बादल छा गये, चेहरे की लालिमा उड़ गई और मायूसी ने अपना बसेरा कर लिया। मैंने बड़े आत्म विश्वास के साथ धर्म पत्नी जी पर धौंस जमाते कहा अभी पिछले सप्ताह ही तो दो किलो प्याज लेकर आया था। इतना सुनते ही श्रीमती जी का गुस्सा फूटा और रौद्र रूप धारण कर बोली क्या मैं अकेली ही सारे प्याज खा गई ? सुबह–शाम दो –दो सब्जियाँ, आरूष (मेरे बेटे का नाम) का टिफिन और आपका रोज का नाश्ता ..... और फिर संडे को चटकारे लेकर चिकन कोरमा किसने खाया था। इन सबमें प्याज तो लगेगा ही ना। धर्म पत्नी जी के हमले 1945 में अमेरिका द्वारा हीरोसीमा और नागासाकी पर गिराये गये परमाणु हमलों से भी अधिक विध्वंसकारी लग रहे थे और अब मुझमें उनका सामना करने की हिम्मत नहीं थी। इसलिये मैंने चुपचाप फोन काटा। और अपने द्विचक्रीय वाहन पर सवार होकर बड़े भारी मन से सब्जी मंडी की ओर चल दिया। सब्जी मंडी पहुँच कर एक सब्जी वाले से पूछा – ''भैया! प्याज क्या किलो दिये?'' वह बोला 100 रूपये किलो। सौ रूपये किलो... सुनते ही मेरी जिह्वा हलक से निकल कर बाहर आ गई। फिर गहरी सांस छोड़कर तर्क करने लगा कि अभी पिछले सप्ताह ही तो 80 रूपये किलो ले गया था। सब्जी वाला बोला भाई साहब !... कौन–सी दुनियाँ में हैं आप। आजकल प्याज के भाव आसमान को छू रहे हैं। लोग सुबह –सुबह अखबार में सोना – चाँदी के भाव बाद में और प्याज के भाव पहले देखते हैं। आजकल प्याज किसी सेलिब्रिटी से कम नहीं है। मैंने उसके लेक्चर सुनने के बजाय आगे बढ़ना उचित समझा और सोचा कि पिछली बार जहाँ से 80 रूपये किलो प्याज खरीदे थे वहीं चला जाऊँ। वहाँ पहुँचने पर देखा कि चाचा जान की दुकान तो सून–सान पड़ी है। और अगल –बगल की दुकानों पर लोग एक दूसरे को कान–फूसी कर रहे हैं। मैंने बड़ी उत्सुकता पूर्वक बाजू में बैठे सब्जी वाले भैया से पूछा कि '' चाचा जी ने आज दुकान नहीं खोली है क्या? भैया ने बताया कि सर.... कल रात को चाचा जान की दुकान से आठ–दस प्याज की बोरी चोरी हो गई है। 25–30 हजार की थी.... प्याज। अब तो दुकान में प्याज रखना बड़ा ही मुश्किल हो गया है। रात को चैन की नींद भी नहीं आती है और बार–बार बस यही ख्याल आता है कि कहीं कोई प्याज चोरी तो न करे ले। बेचारे चाचा जान दिन भर से मारे –मारे फिर रहे है। अभी पुलिस में रपट लिखाने गये हैं। मैं यह सब सुनते ही भौ चक्का सा रह गया। अब सोना– चाँदी छोड़ क्या प्याज के लिये भी लॉकर लेने पड़ेंगे। अंतोगत्वा मैंने बड़े दुखी मन से 100 रूपये किलो की दो किलो प्याज ली और अपने घर की ओर प्रस्थान किया।

घर पहुँते ही श्रीमती जी को प्याज का थैला थमाया और साथ ही आगे से सोच समझकर प्याज का उपयोग करने की सख्त नसीहत दे डाली। प्याज के घर आते ही संपूर्ण वातावरण सौहार्दपूर्ण हो गया। श्रीमती जी का पत्नी धर्म जाग गया और हमें गर्मागरम चाय के साथ बिस्किट भी ऑफर किया। हमनें भी थोड़ा नर्म रूख अख्तियार किया और हल्की सी मुस्कुराहट के साथ श्रीमती जी का आभार व्यक्त किया कि चलो प्याज के बहाने ही सही आज फिर उनको हम पर प्यार आया तो सही।

''प्याज अनंत प्याज कथा अनंता।

गावहिं मिल सब साधु और संता।।

राकेश कुमार मालवीय
वरि. अनुवादक, मुख्यालय

व्यंग्य...

नेताजी का हृदय परिवर्तन



बाजार में नेताजी से मुलाकात हुई, उन्होंने एक बार फिर अपना दिल (माफ कीजिएगा दल) बदल लिया है, यह बात हम जानते थे, हमारे अभिवादन के जवाब में मुस्कुराकर वे बोले ''कैसे हैं पत्रकार महोदय'' ? ''सब कुशल मंगल तो है ना''? जी हॉ बिलकुल मजे में हूँ, आप कैसे हैं? सुना है आपने फिर अपना ''दिल ''बदल लिया है''? हमने चुटकी ली।

''दिल ?'' हमारी बात सुनकर नेताजी कुछ चकराये फिर बात समझ में आने पर मुस्कुराते हुए बोले ''ओह तो आपका मतलब दल से है? जी हाँ! मैंने अपना दल बदल लिया है, क्या है कि पुराने दल में मेरा दम घुट रहा था, वहाँ मुझे घुटन–सी महसूस हो रही थी, मुझे लग रहा था कि इस दल में रहकर मैं उचित तरीके से जनसेवा नहीं कर पाऊँगा। जनता की मुझसे जो अपेक्षाएँ हैं, आकांक्षाएँ है, वह उस दल में रहकर तो पूरी नहीं हो सकती, इसलिये अपनी जनता के हितों की रक्षा के लिए मैंने यह निर्णय लिया, '' नेताजी ने अपने दल बदल का पूरा दोष जनता पर थोप दिया।

''तो जनता ने आपसे दल बदल के लिए कहा था''? जनता चाहती थी कि आप कहीं और दिल लगा लें? आपका यह हृदय परिवर्तन जनता की वजह से हुआ है? जनता आपके इस निर्णय के लिये जिम्मेदार है ? जनता के हितों, उसकी भलाई के लिये आपने–अपने इतने पुराने दल से नाता तोड़ लिया?'' उसकी नीति, सिद्धांत, विचारधारा, नेता सबको छोड़ दिया? हमने नेताजी पर प्रश्नों की बौछार कर दी।

''देखिये, राजनीति में हम जो कुछ भी करते हैं। जनता की मनोदशा, जनता की मनः स्थिति भाँपकर, जनता की इच्छा को सर्वोपरि रखते हुए करते हैं। सार्वजनिक जीवन में जनता ही हमारी माई बाप होती है। जनता ही हमारी ईश्वर होती है। जनता के आशीर्वाद से ही हम जन प्रतिनिधि बनते हैं। ऐसे में जनता की भावनाओं का ध्यान रखना हमारा परम कर्त्तव्य है। इसलिए यदि हम यह कह रहे हैं कि हमने यह कदम (दल बदल) किसी लोभ या लालच में न आकर, किसी पद या प्रतिष्ठा पाने के लिए नहीं उठाया है तो वास्तविकता यह है कि वे लोग अपने मूल सिद्धांतों, विचारधारा से भटक गये थे। उन्हें जनहित, जनता के सुख – दुख से कोई लेना –देना नहीं रह गया था। उनकी राजनीति जन उपकारी जनोन्मुखी न रहकर व्यक्ति विशेष का विकास, व्यक्ति विशेष का प्रचार तक सीमित होकर रह गई थी । एक व्यक्ति या अधिक से अधिक कुछ व्यक्ति की इच्छा, उनकी राय ही पूरे दल की राय बनकर रह गई थी । ऐसे में उनके साथ काम करना हमारे लिए असंभव होता जा रहा था।

''आपने अपना दिल बदल लिया, ''नेताजी की अधूरी बात को पूरा करते हुए हमने कहा'' लेकिन नेताजी, एक बात तो बताइयें, इस दल तथा इसके नेताओं को तो आप पानी पी–पीकर कोसते थे। इनकी हर गतिविधि में आपको एक नहीं अनेकों बुराइयाँ नज़र आती थी। उनके सिद्धांत तथा विचारधारा आपको राष्ट्र तथा राष्ट्रीय एकता के लिए घातक दिखाई देते थे। इनके नेता आपको दिशाहीन, अक्षम, सांप्रदायिक दृष्टिगोचर होते थे। इनका नाम लेते ही आप ऐसे चहक उठते थे जैसे आपको 440 वोल्ट का बिजली का झटका लगा हो। आज वे ही आपके अपने, आपके सगे हो गये। अब उन्हीं से आप गल बहिया करने लगे, सीधे–सीधे कहें तो उनकी गोद में जाकर बैठ गये। इतना विकराल हृदय परिवर्तन ? यह सब जनता के लिए ही है या इसके पीछे कोई अन्य राज तो नहीं? हमने नेताजी को कुरेदा, नेताजी का यह हृदय परिर्वतन वास्तव में हमारे लिए बहुत ही आश्चर्य जनक घटना थी।

''आप भी पत्रकार महोदय कैसी बातें करते हैं, पूरे क्षेत्र में कोई दूसरा ऐसा व्यक्ति नहीं है जो हमारे मुकाबले में खड़ा हो सके, हमें चुनौती दे सकें। ऐसा तो कोई दूर –दूर तक हमें नज़र नहीं आता। जहाँ तक सिद्धांत और विचार धारा की बात है, हमारे वर्तमान दल की नीतियाँ और सिद्धांत मुझे राष्ट्रहित में कहीं अधिक सार्थक, कहीं अधिक उचित लगे, इन लोगों की राष्ट्रवाद के प्रति जो सुदृढ़ भावना है, उसने मुझे अंदर तक प्रभावित किया है, मेरे अंतः करण को झकझोर कर रख दिया है, सच कहें तो इस दल की विचार धारा ने ही मुझे अपना हृदय परिवर्तन करने पर मजबूर किया है''।

कल तक जो नीतियाँ, जो सिद्धांत, जो विचारधारा, नेताजी को साम्प्रदायिक, वैमनस्यता बढ़ाने वाली लगती थी। आज वे ही राष्ट्रवादी तथा राष्ट्रीय हितों के लिए आवश्यक लगने लगे। कल तक जिनका नाम मात्र लेने से ही नेताजी उत्तेजित होकर उनके विरूद्ध धुआंधार प्रलाप करने लगते थे। आज वे ही सगों से भी बढ़कर सगे, आत्मीय दिखाई देने लगे। नेताजी उनके साथ सहजता अनुभव करने लगे तथा कल तक जिनके साथ रहकर, साथ–साथ जीने मरने की कसमें खाते थे। जिन्हें भाई से बढ़कर बताते थे, उनमें आज दोष ही दोष, अवगुण ही अवगुण नज़र आने लगें। इसके पीछे कोई न कोई रहस्य तो अवश्य ही होगा, यही सोचकर हमने नेताजी की ओर तीर चलाया, '' सुना है इस बार आपका दल, इस क्षेत्र से किसी और कार्यकर्ता को उम्मीदवार बनाने की सोच रहा था। उम्मीदवार को लेकर जो रायशुमारी की गई, उसमें आप कहीं पीछे छूट गए। ऐसे में इससे पहले कि आपकी पार्टी आपका टिकिट काटती, आपने ही अपनी पार्टी का दामन छोड़ना उचित समझा, कहीं ऐसा तो नहीं है''?

हुआ वही जो हमने सोचा था, हमारा तीर एकदम ठीक निशाने पर जाकर लगा। हमारा प्रश्न सुनते ही नेताजी थोड़ा अचकचाए, फिर अपना पक्ष साफ करते हुए बोले– ''आप लोग भी जाने कहाँ–कहाँ की सुनी सुनाई बातों पर विश्वास कर लेते हैं, यदि कहीं कुछ भी न हो तो नई–नई बातें गढ़ लेते है। अभी आप जो कह रहे हैं विश्वास मानिये, वह पहली–पहली बार मैं आपके मुहँ से सुन रहा हूँ। पिछली पार्टी हो या वर्तमान पार्टी, मेरा टिकट काटकर दूसरे को देने वाला, अभी दूर–दूर तक तो मुझे कोई दिखाई नहीं देता, यह तो एक सहज स्वाभाविक हृदय परिवर्तन की घटना है। उस दल के नेता मुझे चरित्रवान, निष्ठावान, ईमानदार, राष्ट्रभक्त लगे।

मुझे लगा कि इस दल में रह कर, मैं अपने क्षेत्र की जनता की सेवा अधिक बेहतर और अधिक सुलभ ढंग से कर सकूँगा। अपने पिछले दल का कोई भविष्य मुझे दिखाई नहीं दे रहा था। साथ ही उनकी बातों से मुझे राष्ट्रविरोध, राष्ट्रद्रोह की गंध आने लगी थी । ऐसे में चाहकर भी मैं उनके साथ नहीं चल सकता था। इनके साथ रहकर राष्ट्रविरोधी/राष्ट्रद्रोही का ठप्पा मैं अपने ऊपर नहीं लगवाना चाहता था। रहा सवाल रायशुमारी का तो जब उस दल से अब मेरा कोई सम्बन्ध ही नहीं रह गया तो फिर इस मुद्दे पर कोई भी टिप्पणी करना मुझे उचित नहीं लगता'' मुद्दे की बात नेताजी साफ गोलकर गए।

''आप नेता लोग भी राष्ट्रद्रोह तथा राष्ट्रभक्ति की परिभाषा अपनी सुविधानुसार अपनी आवश्यकतानुसार गढ़ लेतें है आपको जब लगता है कि किसी दल विशेष में रहने से आपके हित सध रहे हैं, आपके उज्जवल भविष्य की संभावनाऐं हैं, आप उसी दल का दामन थाम लेते हैं, उसके साथ ही अपना दिल मिलाने लगते हैं जबकि जैसे ही उस दल की चुनावी संभवनाएँ मध्यम या कम दिखाई देने लगती है, आपका दिल भी उससे उचटने लगता है, आपको उसमें बुराईयाँ दिखनी प्रारम्भ हो जाती हैं, आप उसके साथ चलने में, उस दल में बने रहने में असहज अनुभव करने लगते हैं, उस समय दल की नीतियाँ, विचारधारा, नेता कार्यकर्ता कोई भी आपको उस दल में बने रहने के लिए बाध्य नहीं कर पाता, आप सारे जुड़ाव, सारे बंधनों को तोड़कर एक नए दल में प्रवेश करते है तथा एक नई पारी खेलने के लिए तैयार हो जाते हैं, किसी पर भी राष्ट्रद्रोह तथा किसी पर भी राष्ट्रभक्ति का चरण करना आप लोगों के लिए बहुत आसान है, ऐसा लग रहा है कि जैसे देश में राष्ट्रद्रोह तथा राष्ट्रभक्ति के प्रमाण पत्र देने की अघोषित होड़ चल रही है। कौन, कब, कैसे राष्ट्रद्रोही या राष्ट्रभक्त बन जायेगा यह कोई नहीं जानता ? ऐसे में अपने दल बदल को भी हृदय परिवर्तन का नाम देकर, आप उसे जनता के हित में और उचित बता रहे हैं। अभी इस बात का भी कोई भरोसा नहीं कि कब आपका दिल, इस दल से भी भर जाऐ और आप एक बार फिर जनता के हित में हृदय

परिवर्तन के लिए बाध्य हो जाएँ, मजबूर हो जाएँ। भगवान ही जाने आप लोगों का हृदय परिवर्तन का यह सिलसिला कब और कहाँ जाकर रूकेगा या रूकेगा भी या नहीं? लेकिन हृदय परिवर्तन के नाम पर स्वार्थ परकता का यह जो खेल आप खेल रहे हैं, उससे देश की जनता किस बुरी तरह आहत हो रही है, किस बुरी तरह क्षुब्ध है? क्या आप इसे जानते हैं? हमने नेता जी से प्रश्न पूछा।

''आप भी बस पत्रकार महोदय, कहाँ–कहाँ की बातें ले बैठे? देखिये हम राजनीति में हैं और राजनीति में सत्ता प्राप्ति ही परम लक्ष्य, अंतिम उद्देश्य होता है। ऐसे में उस दल, उस नेता के साथ क्या बँधे रहना, जिससे लोगों का मोह भंग हो गया हो, जिसके साथ रहने में दूर–दूर तक कोई लाभ दिखाई न दे रहा हो, जो स्वप्न में भी विजय श्री न दिलवा सकता हो, साफ कहूँ तो जिसके साथ रहना सीधे–सीधे घाटे का सौदा नजर आ रहा हो। ऐसी विषम परिस्थितियों से बाहर निकलने का ''हृदय परिवर्तन के साथ दल बदल'' ही सबसे आसान एवं सबसे सटीक उपाय हमें नज़र आता है और हमने वही किया। आप इसे चाहे जिस नाम से सुशोभित करें। हमारी दृष्टि में यह एक समयानुकूल, चतुराई भरा कदम है और आज के युग में यदि राजनीति में बने रहना है, स्वयं को सबसे आगे रखना है तो समय के साथ हृदय परिवर्तन करना ही पड़ता है वक्त के साथ हृदय परिवर्तन आज कि एक पहली आवश्यकता है। ''नेताजी ने हृदय परिवर्तन का असली राज खोला। नेताजी की इस बेबाक राय के बाद अब हमसे और कुछ नहीं कहा गया। हम चुपचाप उनका मंद–मंद मुस्कुराता चेहरा निहारते रहे।

संजय अय्पा
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक
प.म.रे, हाई स्कूल जबलपुर





शिक्षा का दीपक



गीता एक शिक्षित परिवार में पढ़ी– लिखी शिक्षित महिला थी। अपनी मेहनत और लगन से अर्जित शिक्षा का सद्उपयोग करने के उद्देश्य से और पारिवारिक संस्कारों से प्रेरित होकर अपने ही शहर के एक प्रतिष्ठित स्कूल में बच्चों को पढ़ाने का दायित्व सम्भाल लिया। अपनी कार्यशैली और अनुभव के आधार पर धीरे–धीरे उन्नति करती रही। बच्चों को पढ़ाने में जो आनंद गीता को मिलता था। उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। गीता की क्लास के सभी बच्चे बहुत खुश रहते और परीक्षा में भी अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होते थे।

एक बार शासकीय कार्य से गीता को उच्च शिक्षा अधिकारी के कार्यालय में बस द्वारा एक अन्य शहर जाना पड़ा। करीब 4–5 घंटे का सफर था। चलते–चलते बस रूक गई तो ड्रावर ने बताया कि बस का एक पहिया पंचर हो गया है और पंचर सुधरवाने में करीब दो घंटे का समय लग जाएगा क्योंकि पंचर ठीक करने वाले को दूर से लेकर आना है। बस ड्रायवर ने यात्रियों से कहा कि वे लोग पास वाले गाँव में घूम–फिर लें और चाय–नाश्ता कर लें।

अन्य यात्रियों के साथ गीता भी गाँव की ओर चल दी और गाँव में प्रवेश करने पर देखा कि कुएं पर कुछ लड़कियाँ पानी भर रही हैं। गीता ने उन बच्चियों से उत्सुकता वस कुछ बात करने की कोशिश की, लेकिन वे बच्चियाँ बिना कुछ बोले ही अपने–अपने घर की ओर प्रस्थान कर गई और गीता ताकती रह गई। उसी समय एक राहगीर वहाँ से निकलते समय यह सब कुछ देख–सुन रहा था। उसने गीता से कहा कि '' यह बच्चियाँ आपसे बात नहीं कर सकती।'' गीता ने आश्चर्य से पूछा क्यो? राहगीर ने बताया कि ''ये लड़कियाँ पढ़ी–लिखी नहीं हैं और आप जैसी शहरों में रहने वाली पढ़ी–लिखी महिलाओं से बातचीत करना नहीं आता।'' तभी गीता ने राहगीर से पूछा कि ''ऐसा क्या है''? तब राहगीर ने जवाब दिया कि ''इस गाँव में लड़कियों को पढ़ाने की परम्परा नहीं है। केवल लड़कों को पढ़ाया जाता है। लड़कियाँ तो सिर्फ चूल्हे–चक्की के लिए ही होती हैं।''

गीता इससे और अधिक जानकारी लेने की सोच रही थी, लेकिन जब तक बस का हॉर्न बज गया और वह बस की ओर चल पड़ी। लेकिन गीता के मन में कुतूहल मचा हुआ था कि ''आखिर ऐसा क्या कारण है कि इस गाँव में लड़कियों को पढ़ाया नहीं जाता ? वह राहगीर की बात को भुला नहीं पा रही थी।''

गीता ने मन ही मन में उस गाँव को शिक्षित करने खासतौर पर लड़कियों और महिलाओं को शिक्षा से वंचित नहीं होने देगी, ऐसा प्रण किया। इस कार्य को कैसे शुरू किया जावे, उसी उधेड़ बुन में लग गई। नौकरी भी करना और उस गाँव को शिक्षित करने के लिए समय निकालना एक कठिन कार्य था। उसने गाँव के पास ही एक घर किराये से लिया और वहीं से अपना कार्य करने लगी।

गीता उस समय एक कॉलेज में प्रोफेसर हो गई थी। वह रोज खाली समय में गाँव में घर–घर जाकर वहाँ की लड़कियों, महिलाओं, और पुरूषों को शिक्षा के महत्व के बारे में बताती एवं समझाती लेकिन वहाँ कोई भी उसकी बात समझना तो दूर, सुनने को भी तैयार नहीं होता था। इस नेक कार्य को करने के लिए गीता ने अपनी दो –तीन सहेलियों से भी मदद ली परंतु गाँव वालों ने इन लोगों का कहना नहीं माना बल्कि डरा–धमका कर गाँव से चले जाने के लिए कहा।

गाँव वालों की धमकियों के कारण गीता की सहेलियों ने इस कार्य से मुँह मोड़ लिया लेकिन गीता अपने प्रण पर अड़ी रही। उसका दृढ़ निश्चय था कि वह अपना कार्य बीच में छोड़ कर नहीं जाएगी। गाँव वालों ने उसे भगाने के लिए कई हथकंडे अपनाये लेकिन गीता अपने निर्णय पर अटल थी। हाँलाकि काम करते–करते करीब छः माह बीत गये, लेकिन गाँव वाले थे कि

टस से मस नहीं हुए। गीता को समझ आ रहा था कि... ''लड़कियों को नहीं पढ़ाने के पीछे जरूर कोई बड़ी बात है, नहीं तो गाँव वाले मेरी बात ही न सुने, ऐसा नहीं हो सकता।''

गाँव की कुछ महिलायें गीता की बात से तो सहमत थी, लेकिन वे अपने पतियों से डरती थी। समय गुजरता गया, तभी एक दिन अचानक गाँव के मुखिया जी की तबियत बिगड़ गई। उन्हें अस्पताल ले जाया गया और डॉक्टर ने उन्हें देख कर दवाइयाँ लिख दी और मुखिया जी घर वापिस आ गये। मखिया जी की दवाई तो चल रही थी लेकिन तबियत में कोई खास सुधार नहीं हो रहा था। कुछ दिनों बाद उसकी तबियत ज्यादा बिगड़ गई, लेकिन मुखिया जी को अस्पताल ले जाने वाला कोई नहीं था। गाँव के सभी लोग किसी दूसरे गाँव में शादी समारोह में गये हुए थे। मुखिया जी की दो लड़कियाँ ही उनके पास थी, उनकी उम्र करीब दस–बारह साल की होगी। तबियत खराब होने पर जैसे–तैसे मुखिया ने डॉक्टर को फोन लगा कर बात की, तब डॉक्टर ने कहा कि ''आपकी दवाई जो चल रही है, उसी में से एक दवा हर घंटे में ले। उस दवा का नाम डॉक्टर ने बताया भी था। थोड़ा आराम मिलते ही जल्द अस्पताल आकर दिखाओ।

मुखिया जी को दवा समझ नहीं आ रही थी, क्योंकि वह स्वयं ज्यादा पढ़े–लिखे नहीं थे। उन्हें बहुत घबराहट हो रही थी। वह सोच रहे थे कि अब क्या करें। तभी उन्हें गीता का ध्यान आया और बेटियों को गीता बुलाकर लाने के लिए भेजा, गीता तुरंत आ गई और डॉक्टर से पुनः बात करके दवा मुखिया जी को देना शुरू कर दिया, जो डॉक्टर ने गीता को बताई थी। करीब दो घंटे बाद मुखिया जी को आराम मिला और उन्होंने गीता को उनकी जान बचाने के लिए धन्यवाद दिया।

तब तक गाँव के सभी लोग भी शादी से लौट आये थे और करीब सभी लोग मुखिया जी की तबियत अधिक खराब होने की खबर सुनकर एकत्रित थे। समय और माहौल की नाजाकत को भापते हुए, गाँव वालों की उपस्थिति में, गीता ने मुखिया जी से कहा कि '' यदि आपने अपनी बेटियों को पढ़ाया होता तो आज आपको इतनी देर तक तकलीफ नहीं झेलनी पड़ती और वे दोनों आपको दवाई दे सकती थी। '' मुखिया जी गीता की बातें बड़े ध्यान से सुन रहे थे। सभी बातें समझ भी आ रही थी। गीता ने पूछा कि आपके गाँव में लड़कियों को क्यों नहीं ''पढ़ाया जाता''? मुखिया जी ने बोला ''मैडम जी, हमारे गाँव में लड़कियों को पढ़ाने की परम्परा ही नहीं हैं। इस कारण हमने कभी लड़कियों के पढ़ाने पर ध्यान ही नहीं दिया।''

मुखिया जी ने गीता से कहा कि '' आपने हमारी आँखे खोल दी है। आज की इस घटना ने मुझे ही नहीं अपितु पूरे गाँव को प्रेरित किया है कि शिक्षा पर किसी एक का अधिकार नहीं है बल्कि शिक्षा को जितना बाँटा जाए, उतना ही ज्ञान बढ़ता है।

''मैडम जी, आप जिस शिक्षा के दीपक को लेकर गाँव को रोशन करने आई हैं, आज से उस कार्य में, मैं और मेरा पूरा गाँव आपका सहयोग करेगा। साथ ही गाँव में ही एक स्कूल खुलेगा, जिसमें लड़के और लड़कियाँ दोनों ही शिक्षा ग्रहण कर सकेगें।'' गाँव वालों ने भी मुखिया जी की घोषणा पर अपनी सहमति जता दी थी। गीता बहुत खुश थी कि उसका सपना पूरा हो गया और उसकी आँखे नम हो गई।

समय बीतता चला गया, स्कूल तो चालू हो ही गया था और आगे बढ़ रहा था । एक दिन अखबार में मुखिया जी की दोनों बेटियों की फोटो छपी कि दोनों लड़कियाँ दसवीं की परीक्षा में अव्वल आई है। यह खबर पढ़ कर गीता बहुत खुश थी। उसका ध्येय ही बन गया था कि गाँव–गाँव जाकर शिक्षा के दीपक को जलाना है और उसकी ज्योति से देश गाँवों को जगमग करना है। इस पुण्य कार्य में गाँव के लोग भी साथ दे रहे थे कि ''शिक्षा का दीपक जलाना है, गाँवों को रोशन करना है। जहाँ भी जाएँगे, रोशनी लुटाएगें''। नेपोलियन बनापार्ट कहा है–

''अशिक्षित रहने से पैदा न होना अच्छा है,

क्योंकि अज्ञान सब बुराइयों का मूल है।''

एच.पी. सक्सेना
से.नि.कार्या.अधीक्षक भोपाल

परिवार





एक बार फिर मैं अपने जीवन में गुजरे एक यादगार लम्हें को लेकर आपके सामने हूँ। अक्सर मैं ट्रेन की बोगी के भीतर हुये संस्मरण आपसे सांझा करती हूँ लेकिन इस बार एक रेलकर्मी द्वारा मेरे ऊपर किये एहसान की ये दास्तां है। जो कहानी बनकर मेरे हृदय पटल पर अमिट है। जो एक नहीं दो है। लेकिन इस बार मैं। एक याद बात सांझा कर रही हूँ। यह बात 1993 की है। अभी मेरे पति को जो रेलवे में तकनीशियन के पद पर कार्य करते थे। स्वर्गवासी हुये एक वर्ष हुआ था। बात झांसी मंडल की है। अनुकंपा नियुक्ति की कार्यवाही प्रारंभ हो चुकी थी। नियुक्ति हेतु लिखित परीक्षा की तिथि भी प्राप्त हो चुकी थी । अचानक मेरी 4 वर्षीय पुत्री बीमार हो गई और इतनी, बीमार हो गई। कि उसे रातों–रात प्रॉइवेट हॉस्पिटल में भर्ती कराना पड़ा । इस वक्त तक मेरे पास रेलवे का मेडिकल कार्ड भी नहीं था। झांसी में मेरा अपना और कोई नहीं था। हाँ! जिस मकान में मैं रहती थी, वो भी किराये का था। नौकरी न रहने की वजह से तंगी रहती थी। उस वक्त अपनी बेटी कि हालत देखकर मैंने मकान मालिक से कहा–अच्छे से अच्छा जो अस्पताल हो वहीं मेरी बेटी को भर्ती करवा दीजिये। उन्होंने वही किया मेरा सहारा बस ऊपर वाला था क्योंकि अक्सर दुख कष्ट की घड़ी में बिरले ही होते हैं जो अपनों का साथ देते हैं। पर ऐसा बिरला रिश्तेदार मेरे पास नहीं था। खैर थोड़ी–सी जमा पूँजी और पास के थोड़े से जेवर बेचकर बेटी का इलाज शुरू हुआ। एक दिन डॉक्टर साहब ने कहा आपकी बेटी बहुत कमजोर है। उसे खून चढ़ाना पड़ेगा। आप ब्लड का इंतजाम कीजिये । आप खून खरीदना मत, अपने किसी रिश्तेदार को बुलाइये ताकि हम ब्लड चढ़ाने की प्रक्रिया पूरी कर सके । हाँ! आपकी बेटी का ब्लड ग्रूप O पॉजिटिव है। सुनकर मैंने कहा मेरा ले लीजिये मेरा भी ब्लड ग्रुप यही है। पर यहाँ पर वक्त को कुछ और ही मंजूर था। मेरी जांच की सारी प्रक्रिया पूरी होने के बाद पता चला कि मैं तो ब्लड प्रेशर की मरीज हूँ और शारीरिक रूप से कमजोरी भी भगवान क्या करूँ? कैसे ब्लड की व्यवस्था कँरू। इसी ऊहा–पोह में दो दिन निकल गये। तीसरे दिन डॉ. साहब ने कहा– ''आपने ब्लड की व्यवस्था नहीं की''। आप समझ नहीं रहे हैं, आपकी बेटी की हालत ठीक नहीं है। इतना कहकर डॉ. साहब चले गये। पर मैं निराशा के घने पाताल में समाती चली जा रही थी । मन में आया जोर से दहाड़ मार कर रोऊ, चीख–चीख कर लोगों से कहूँ । कृपया मेरी मद्द कर दीजिये। पर ये भी विधाता को मंजूर नहीं था। अपने दोनों छोटे बच्चों को लेकर वहीं बाहर अस्पताल की बेंच पर बैठकर रोने लगी। आपको बता दूँ। मेरे तीन बच्चे हैं। उस वक्त बड़ा बेटा 5 वर्ष का, छोटा बेटा 8 माह का था। पता नहीं कब तक मैं यूँ ही रोती रही।



अचानक मुझे रोता देख एक 30–35 वर्षीय युवक मेरे पास आया और बोला आप क्यों रो रही है? आपको कोई तकलीफ है क्या? या कोई आपको परेशान कर रहा है। जवाब में मैंने कहा–नहीं! मुझे कोई परेशान नहीं कर रहा। उसने दोबारा सवाल किया फिर आप क्यों रो रहे हो? मुझे अपना भाई समझे। बताये शायद मैं आपकी कोई सहायता कर सकूँ। उसके मुख से भाई शब्द सुनकर मेरे मन ने कहा– शायद ये सज्जन मेरी मदद कर दें। भगवान ने उसे

मेरे लिये भेजा हो और मैंने उसे सारी बात बता दी। सुनकर वो बोला ओह! बैडलक मेरा ब्लड ग्रूप A है। पर कोई बात नहीं आप वार्ड नं. पलग नं. बताये मैं कुछ न कुछ करता हूँ। मैंने वार्ड नं., पलग नं. बताया वो सुनकर चला गया। रात्रि करीब सात बजे वह युवक एक अन्य आदमी के साथ फिर आया और बोला यह मेरा मित्र है। इसके पिता जी यहीं इसी अस्पताल में भर्ती है। मैं उन्हें ही देखने आया था। इनका ब्लड ग्रूप O है और इनके पिता जी को A ब्लड ग्रूप की जरूरत है। मैं इसके पिता जी को ब्लड दूँगा । बदलें में यह आपकी बेटी को ब्लड देगा। हम लोग कल सुबह आयेगें क्योंकि अभी मेरी 4 से 12 ड्यूटी है। कहकर वो चला गया । मैं विचार करने लगी कि अब वह नहीं आयेगा । क्योंकि न मैं उसे जानती हूँ न वो मुझे जानता है। इस मतलबी दुनिया में कौन किसकी मदद करेगा। जब इस तकलीफ में मेरे अपनों ने दूरी बना ली। फिर ये तो अंजान और पराया हैं और मैंने पक्का इरादा कर लिया था। कल जब डॉ. साहब आयेंगे तो मैं कहूँगी मेरी बेटी को डिस्चार्ज कर दीजिये। मैं अपने मायके कटनी जाकर उसका इलाज करवा लूँगी। अगली दूसरी सुबह मैंने अपना सारा सामान समेट लिया कि अब तो जाना ही है। डॉ. साहब 9 बजे के लगभग आते थे, पर ये क्या सुबह 8.00 बजे ही वह युवक एक अन्य युवक के साथ आ गया और सीधा ड्यूटी सिस्टर के पास जाकर बोला–''बच्ची को ब्लड देने की प्रक्रिया बताये''। नर्स ने उन्हें सारी प्रक्रिया समझायी। वो मेरे पास आया और बोला अब सारी परेशानियाँ खत्म हो जायेंगी। तकरीबन 11.00 बजे बच्ची को ब्लड चढ़ाया गया । तभी वह युवक आया, मेरी बेटी के सिर पर हाथ फेरा और बोला आप जल्दी ठीक हो जाओ। मैंने उससे कहा भाई आपका बहुत–बहुत धन्यवाद। यदि आज आप न होते तो न जाने क्या होता। तब वो एक रहस्यमयी मुस्कुराहट के साथ बोला ऊपर वाला है न। वो सबकी मदद करता हैं। साथ ही पूछ बैठा आपके पति कहाँ है? इस पर मैंने अपनी आप बीती सुना दी। वो अभी कुछ 1 वर्ष पहले स्वर्गवासी हुये। वे डीजल शेड झांसी में तकनीशियन के पद पर थे और मेरी अनुकंपा नियुक्ति की प्रक्रिया प्रारंभ हो चुकी है। सुनकर वो चहक कर बोला – ''तब तो आप हमारे परिवार का हिस्सा है'' क्योंकि आपके पति रेल कर्मचारी थे। मैं भी एक रेल कर्मचारी हूँ। इस नाते ये मेरा फर्ज था। मेरे एक भाई की बच्ची की सहायता करना था, जो अंजाने में फर्ज पूरा हुआ।

वह युवक दूसरे दिन फिर आया । इस बार वह बहुत सारे फल लेकर आया और बोला – दीदी! डॉ. साहब से बात हो गई है। बच्ची अब खतरे से बाहर है। उसे खूब फल खिलाइये वो ठीक हो जायेगी । कुछ मिनट रूक कर वह यह कहकहर चला गया मैं फिर आऊँगा लेकिन वो फिर कभी नहीं आया। मैं रोज उसका रास्ता देखती। पूरे अस्पताल में उस दूसरे युवक को खोजती पर वो दोंनो ही मुझे दोबारा नहीं मिले। एक सप्ताह बाद मेरी बेटी पूर्णतः स्वस्थ हो गई। अस्पताल से छुट्टी भी मिल गई। पर उस युवक से दोबारा मुलाकात फिर कभी नहीं हुई। मैंने अपने मन को तसल्ली दी क्या रेलवे का हर रेल कर्मी ऐसा ही है। निस्वार्थ दयावान, यदि हाँ! तो मैं धन्य हो जाऊँगी ऐसे विभाग में नौकरी पा कर। क्या ये विभाग एक परिवार है जो निष्कपट निश्छल भाव से अपना कार्य करते हैं या फिर भगवान को भी रेलवे मोहता है। क्या वो युवक भगवान थे जो मेरे सन्मुख एक रेल कर्मी का परिचय लेकर आये थे, क्योंकि वो फिर दोबारा नहीं आया। शायद उसे उसके रेल परिवार का या अन्य कोई दुखीयारा मिल गया हो। जिसकी उन्हें सहायता करनी हो या फिर मनुष्य रूप में घर स्वयं ईश्वर मेरे पास आये थे फिर किसी जरूरतमंद के पास चले गये। वो जो कोई भी हो, उसके शब्द आज तक कानों में शहद घोलते हैं। ''आपके पति रेल कर्मी थे इस नाते आप मेरा परिवार हो''। आपसे मैं फिर मिलूँगी। ऐसी ही किसी स्वार्णिम याद लिये। क्योंकि जब तक सांस रहेगी मेरी रेल यादें बनी रहेगी ।

नोरिन सिलवेस्टर
सेवा निवृत कार्या. अधी.
मं रे प्र. कार्या. जबलपुर

हंसता चेहरा, खिलता फूल।
हिंदी भाषा राष्ट्र, अनुकूल।।



अपनी भाषा अपना देश।
देता गौरव का संदेश।।

कविता

शुभ मंगल हर साल





मंगलमय मंगल करें,
आया लाया प्रातः काल।
कर जोड़े स्वागत करें,
अभिनंदन नव साल।

किरणें कोमल कह रही,
संग सूरज प्रातः काल।
समय के रंगा –रंग सब चले,
शुभ मंगल हर, नव साल।

पंख लगाए उड़ रहे,
दिन महीने हर साल।
घर–द्वारे जन–जन बंटे,
सुख–दुख सबके भाल।

समय बदल बिसराएँ सब,
चल पथ, ऊँची चाल।
परिवर्तन, प्रकृति देन,
कुछ हरियाली कुछ बेहाल।

मेहनत के पग जब बढ़े,
चढ़े वे उन्नति ढाल।
तन–मन धन से सजाए,
है नव जीवन माला–माल।

तन –मन से अब श्रम करें,
सफल करें नव साल।
हर क्षण हर दिन है नया,
लिखे कर्म से भाल।



दया प्रेम ईमान संग,
रहो सदा खुशहाल।
परहित की रख भावना,
अखिल बढ़े हर साल।

जब खुशियों से मिल भरें,
मन के सूने ताल।
हिलमिल नभ तारे रहें,
जाने बीते कितने साल।

अखिलेश ब्यौहार
शिक्षक
पश्चिम मध्य रेलवे स्कूल, जबलपुर

ए जिंदगी जरा !
अकेले में मिल





इस शहर में भीड़ बेतहासा है,
हजारों होते हैं आगे पीछे,
कुछ अपने, कुछ अजनबी,
कुछ हंसते, कुछ शबनबी,
कुछ कल–कल, कुछ दल–दल,
कुछ निरमल, कुछ व्याकुल,
व्याकुल है, फिर भी दिल,
ए जिंदगी! जरा अकेले में मिल।

जंगल में सही, जहाँ झोपड़ी हो वहीं,
पेड़ों की छाँव में,
खेतों में खलिहानों में,
मेरे वालिद के गाँव में।
जरा मुस्कुराकर मिल।
ए जिंदगी! जरा अकेले में मिल।

वो चिड़ियों की चहचहाहट,
वो गायों का रंभाना,
वो कोकिला की कूक,
वो पंछियों का गुनगुनाना।
नहीं देखी बरसों से,
जो खुशबू आती है सरसों से,
आ जाऊँगा अवकाश ले एक दिन
जरा प्यार से मिल, दुलार से मिल।
ए जिंदगी! जरा अकेले में मिल।

वो सरिता का कल–कल
वो झरनों की छन–छन
वो खेती की हरियाली
और भूमिहारों की रखवाली,
अब किताबों में मिलती है,
कलाकार की पेटिंग बन
दूकानों में सजती है।

कहाँ खो गए ऐसे मेहमान से मिल,
ए जिंदगी! जरा अकेले में मिल।

गांव के खेड़े, छोड़े अरसे हो गए,
सांझ की गो धूलि के साथ सखा साथी भी खो गए,
एक दिन मेले में, ठेले में,
मुहाल की पगडंडी में, तीज में त्यौहार में,
मंगल में, नागपंचमी के दंगल में मिल,
ए जिंदगी! जरा अकेले में मिल।

शहर में सब कुछ है, पैसा है,
साधन है, वाहन है,
लेकिन जिगर सम्हलता नहीं, बहलता नहीं,
जो समझा दे मेरे दिल को,
ऐसे किसी किरदार से मिल।
ए जिंदगी! जरा अकेले में मिल।

राजेश कुमार लखेरा
एस.एस.ई., टेली, कार्य
सिगनल एवं दू.सं. विभाग

गिरवी कोख



गरीब मां बाप की सुदंर मोढ़ी
अंधेरे में पल–पल हुई बढ़ी
मांग–मांग कर कापी–किताब
चौथी कक्षा तक ही पढ़ी।

जैसे–जैसे बीता साल
बिटिया करती गई कमाल
काम काज कर हुई सयानी
रखती मां बाप का ख्याल।



पापा करते मेहनत मजदूरी
पानी भरती मां बेचारी
घर घर काम वो करती
गरीबी की मार बढ़ी लाचारी।

मां बाप को चिंता बड़ी
वैनम के चांद की तरह बड़ी
प्यार से उसका ब्याह रचाया
दूल्हन बन डोली–चढ़ी।

आदमी निकला बड़ा निकम्मा
जुआं–ताश में हमेशा था रमा
घर में पढ़ गये खाने के लाले
जेवर बर्तन गिरवी रख डाले।

साहूकार ने किया फरमान
पैसे दे ले जा सामान
गिरवी रख जा कोई चींज
रख अपनी गृहस्थी का मान।

किराये से सब कुछ मिलता है
कुछ साल आराम से जी सकती है
उसने अपने घर की खातिर
अपनी कोख ही गिरवी रख डाली
अपनी कोख ही गिरवी रख डाली।

श्रीमती सिद्धेश्वरी सराफ
जबलपुर

ग़ज़ल



दरिया जज़्बातों के यूं ही उमड़ते हैं
चोट अपनों की हो तो पत्थर भी रो पड़ते हैं,

परीशां मत हो तुम सूरज के डूब जाने से
अंधेरी रात में ही सितारे तेज चमकते हैं,

अजीब करिश्मा है कुदरत तेरी जमाने में
जहां पे मिलना है अक्सर वहीं बिछड़ते हैं

खुद को देखा नहीं आईने में कभी भी हमने
तंज दूसरों पर हर रोज कसा करते हैं,

यूं ही न गुरुर करो तुम अपने जरूज़ पर
दिन में सूरज भी एक बार ढला करते हैं,

मुश्किलें किसकी जिंदगी में नहीं आती है साहिब
हम बे वजह उससे बच के निकला करते हैं,

कब तक कहोगे अपने तजुर्बात पे गज़ल
कुछ लिखिये आप लोगों की हालात पे गज़ल,

एक बार जब मिल थे अकेले तुम हमें
हमने तुम्हें सुनाई थी जज्बात पे गज़ल,

देखा जो आंखों से उसे दिल में छुपा लिया
तब जाकर लिख सके हैं ख्यालात पे गज़ल

सारे जहां के दर्द खुद दिल में समेट कर
हंस हंस कर लिखी इश्क की सौगात पे गज़ल,

कब तक पढ़ोगे उसके कशीदे के वास्ते
जब जनता सुना रही फसादाद पे गज़ल

सुख के फंसाने तुम ही नहीं कहोगे घूम के
हम भी कहेंगे अपनी मुश्किलात पे गज़ल

बी.एन.तिवारी
वरि.तकनीशियन, भोपाल

छायाचित्र - वीथिका



क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की
48वीं बैठक में अपर महाप्रबंधक का स्वागत करती हुई
तत्कालीन मुराधि, श्रीमती वंदना गर्ग।



मुख्यालय की गृह पत्रिका ''राजभाषा सरिता''
का विमोचन करते हुए
अपर महाप्रबंधक एवं विभाग प्रमुख।



श्री राजेश अर्गल, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (निर्माण)
को रेल मंत्री राजभाषा रजत पदक एवं
प्रमाण-पत्र से सम्मानित करते हुए अपर महाप्रबंधक।



श्री टी.के.दास, मु.का.अधी. कोटा कारखाना को
रेलवे बोर्ड की व्यक्तिगत नकद पुरस्कार योजना का
प्रमाण-पत्र प्रदान करते हुए अपर महाप्रबंधक।



श्रीमती सरिता बघेल, निरीक्षक (रे. सु.ब.) को
रेलवे बोर्ड की व्यक्तिगत नकद पुरस्कार योजना का
प्रमाण-पत्र प्रदान करते हुए अपर महाप्रबंधक।



श्रीमती मीना बाखरू, मु.का.अधी., कार्मिक विभाग को
रेलवे बोर्ड की व्यक्तिगत नकद पुरस्कार योजना का
प्रमाण-पत्र प्रदान करते हुए अपर महाप्रबंधक ।

छायाचित्र - वीथिका



क्षेराकास की 48वीं बैठक में स्वागत भाषण देती हुई
तत्कालीन मुराधि, श्रीमती वंदना गर्ग।



अध्यक्षीय संबोधन देते हुए
अपर महाप्रबंधक, श्री शोभन चौधुरी।





क्षेराकास की बैठक में उपस्थित सदस्यगण।



नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 6 वीं बैठक की
अध्यक्षता करते हुए अपर महाप्रबंधक,श्री शोभन चौधुरी।



नराकास की 6 वीं बैठक में अपर महाप्रबंधक का
स्वागत करती हुई तत्कालीन मुराधि, श्रीमती वंदना गर्ग।

छायाचित्र - वीथिका



नराकास बैठक में तत्कालीन मुराधि का स्वागत करते हुए
श्री रोहित कुमार निरंजन, उपमुराधि।



नराकास की बैठक में संबोधन देते हुए
श्री शोभन चौधुरी, अपर महाप्रबंधक।





नराकास की बैठक में उपस्थित सदस्यगण।



नराकास की 6वीं बैठक का एक दृश्य।



हिंदी के सराहनीय प्रयोग हेतु जबलपुर मंडल को
प्रथम पुरस्कार स्वरूप राजभाषा चल शील्ड प्रदान करते हुए
अपर महाप्रबंधक, श्री शोभन चौधुरी।

छायाचित्र - वीथिका



भारतीय जीवन बीमा निगम को द्वितीय पुरस्कार प्रदान करते हुए अपर महाप्रबंधक।



क्षेत्रीय आयुक्त, कर्मचारी भविष्य निधि संगठन को तृतीय पुरस्कार प्रदान करते हुए अपर महाप्रबंधक।



78वीं अखिल भारतीय रेलवे पुरूष हॉकी चैम्पियनशिप का शुभारंभ करते हुए अपर महाप्रबंधक तथा अन्य उच्चाधिकारीगण।



78 वीं अखिल भारतीय रेलवे पुरूष हॉकी चैम्पियनशिप में संबोधन देते हुए अपर महाप्रबंधक।



पश्चिम मध्य रेलवे की पुरूष हॉकी टीम के साथ समूह चित्र में अपर महाप्रबंधक तथा अन्य अधिकारीगण।



पमरे के खिलाडियों के साथ अपर महाप्रबंधक तथा खेलकूद संघ के पदाधिकारीगण।

छायाचित्र - वीथिका



भारत रत्न डॉ. बी.आर. आंबेडकर के महापरिनिर्वाण दिवस के अवसर पर पुष्पांजली अर्पित करते हुए प्रधान मुख्य यांत्रिक इंजी., श्री आशुतोष गंगल।



भारत रत्न डॉ. बी.आर. आंबेडकर के महापरिनिर्वाण दिवस पर बुद्ध वंदना प्रस्तुत करते हुए कर्मचारीगण।



भारत रत्न डॉ. बी.आर. आंबेडकर के महापरिनिर्वाण दिवस पर उपस्थित अधिकारी एवं कर्मचारी।



चल लेखा निरीक्षक सेमिनार में टीआईए बुलेटिन का विमोचन करते हुए अपर महाप्रबंधक, प्रधान वित्त सलाहकार, वरि. उप महाप्रबंधक तथा अन्य अधिकारीगण।



चल लेखा निरीक्षक सेमिनार में उपस्थित अधिकारी एवं निरीक्षक।



भारत स्काउट एवं गाइड मुख्यालय के पदाधिकारियों के साथ राज्य मुख्य आयुक्त, श्री विजय कुमार गुप्ता, वरि.उप महाप्रबंधक।

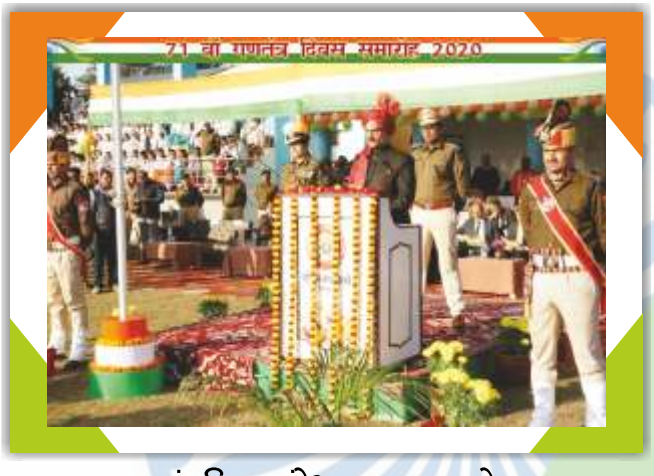
छायाचित्र - वीथिका



71वें गणतंत्र दिवस के पावन अवसर पर
झंडा वंदन एवं राष्ट्रगान।



71वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर
रेल सुरक्षा बल टुकड़ी द्वारा मार्चपास्ट।



गणतंत्र दिवस संदेश का वाचन करते हुए
महाप्रबंधक महोदय।



गणतंत्र दिवस – 2020 के अवसर पर
गुब्बारे छोड़ते हुए महाप्रबंधक श्री शैलेन्द्र कुमार सिंह
एवं अध्यक्षा, म.क.स., श्रीमती अर्चना सिंह।



गणतंत्र दिवस समारोह में महाप्रबंधक जी,
अध्यक्षा म.क.सं., अपर महाप्रबंधक तथा विभाग प्रमुख।



गणतंत्र दिवस पर बच्चों द्वारा सांस्कृतिक
कार्यक्रम की प्रस्तुति।

शब्दानुशासन

Administrator	प्रशासक
Administration	प्रशासन
Supporter	समर्थक
Support	समर्थन
Guide	मार्गदर्शक
Guidance	मार्गदर्शन
Liquidator	परिसमापक
Liquidation	परिसमापन
Assignor	समनुदेशक
Assignment	समनुदेशन
Operator	परिचालक
Operation	परिचालन
Necessary	आवश्यक
Essential/Compulsory	अनिवार्य
Required	अपेक्षित
Anticipated	प्रत्याशित
Action	कार्रवाई
Proceeding	कार्यवाही
Enclosure	संलग्नक
Annexure	अनुलग्न
Appendix	परिशिष्ट
List	सूची
Schedule	अनुसूची
Conduct	आचरण
Misconduct	कदाचरण
Misbehaviour	कदाचार / दुर्व्यवहार
Behaviour	व्यवहार
Education	शिक्षा
Training	प्रशिक्षण
Trainee	प्रशिक्षार्थी
Apprentice	शिक्षु

Department	विभाग
Section	अनुभाग
Officer	अधिकारी
Office Bearer	पदाधिकारी
Authority	प्राधिकारी (व्यक्ति)
Class	श्रेणी
Cadre	संवर्ग
Category	कोटि
Transportation	परिवहन
Movement	संचलन
Traffic	यातायात
Additional	अपर (पदनाम में)
Under	अवर
Signature	हस्ताक्षर
Initial	आद्यक्षर
Junior	अवर
Senior	प्रवर
Chief	मुख्य
Head	प्रधान
General	महा / सामान्य
Miscellaneous	विविध / फुटकर
Amendment	संशोधन
Modification	आशोधन
Corrigendum	शुद्धि पत्र
Letter	पत्र
Circular	परिपत्र
Application	आवेदन
Representation	अभ्यावेदन
Scheduled	अनुसूचित
Notified	अधिसूचित
Notification	अधिसूचना



स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

Designed & Printed by The GRENADIERS Association Printing Press, Jabalpur, Ph.: 0761-2620184, Mob.: 09425151241, E-mail : gagrc@hotmail.com. ISO 9001 : 2015